षष्ठ अध्याय

समकालीन उपन्यासों में प्रभा खेतान का योगदान

(महिला उपन्यासकारों के विशेष संदर्भ में)

6.1. समकालीन उपन्यासों में प्रभा खेतान का योगदान (महिला उपन्यासकारों के विशेष संदर्भ में)

6.1.1. उषा प्रियंवदा

6.1.2. अलका सरावगी

6.1.3. मैत्रेयी पुष्पा

6.1.4. मालती जोशी

6.1.5. ममता कालिया

6.1.6. नासिरा शर्मा

6.1.7. मेहरून्निसा परवेज

6.1.8. चंद्रकांता

6.1.9. मृदुला गर्ग

6.1.10. सूर्यबाला

6.1.11 रजनी पन्नीकर

6.1.12. मंजुल भगत

6.1.13. शशिप्रभा शास्त्री

6.1.14 निरूपमा सेवती

6.1.15 राजी सेठ

6.1.16 कांता भारती

6.1.17 कृष्णा सोबती

6.1.18. कुसुम अंचल

6.1.19. दीप्ति खंडेलवाल

6.1.20. शुभा वर्मा

6.1.21 प्रतिभा वर्मा

6.1.22 ऋता शुकला

6.1.23. कविता सिंह

6.1.24 प्रभा सक्सेना

6.1.25 मन्नू भंडारी

6.1.26 शिवानी

6.1.27 सुषमा बेदी

6.1.28 निलिमा सिंह

6.1.29 मणिक मोहिनी

6.1.30 कृष्णा अग्निहोत्री

6.1.31 प्रभा खेतान

6.2. समकालीन उपन्यासों में प्रभा खेतान का योगदान

6.2.1. स्त्री जीवन की समस्याएँ

6.2.1.1. बेटी के जन्म पर निराशा

6.2.1.2 दहेज समस्याएँ

6.2.1.3. पारिवारिक विघटन

6.2.1.4. नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण

6.2.1.5. नारी की आर्थिक परतंत्रता

6.2.1.6. सेक्स, प्रेम एवं विवाह की समस्या

6.2.2. कार्पोरेट जगत का वास्तव चित्रण

6.2.3. भोगे हुए यथार्थ का चित्रण

6.2.4. विदेश यात्रा का वर्णन

6.2.5. मारवाड़ी समाज का यथार्थ चित्रण

6.2.6. नई संरचनात्मक दृष्टि

6.2.7. स्त्री के विभिन्न रूप

निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय

समकालीन उपन्यासों में प्रभा खेतान का योगदान

(महिला उपन्यासकारों के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तावना -

उत्तर आधुनिक काल नारी लेखन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस युग में प्राचीन स्थापनाओं, धारणाओं और मान्यताओं में लक्ष्यवेधी परिवर्तन आने लगा। सन 1960 के पश्चात नारी लेखन में विविधता आने लगी। नारी जीवन के विविध पहलुओं पर लेखन होने लगा। यह सत्य है कि स्त्री पुरूष के मध्य, प्राकृतिक जैविक अन्तर होने के बावजूद स्त्री की मानसिक शक्तियाँ तथा उसका बोध विशिष्ट है। इस दृष्टि से कला सृजन में नारी संवेदनाएँ अपना विशेष अर्थ रखती है।

प्रभा खेतान के अनुसार, "वास्तव में नारीवाद का केन्द्रीय मुद्दा है, उन समस्याओं को अभिव्यक्त करना जिन्हें अब तक इतिहासकार केवल पुरूष संदर्भ में ही देखते रहने के अभ्यस्त है, जिसका परिणाम यह हुआ कि इतिहास और दर्शन द्वारा दिए गए अन्याय का ठप्पा स्त्री चेतना पर हमेशा के लिए अंकित हो गया। वास्तविकता तो केवल पुरूष दृष्टि से ही देखना ज्ञान की प्रणाली सीमित करना है।"[1] विशेष रूप से कामकाजी और नौकरीपेशा महिलाओं की समस्याओं को लेकर साहित्य सृजन होने लगा। आज ईमानदारी के साथ आधुनिक नारी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। नारी विमर्श का चिंतन तेजी से करवटें बदल रहा है। नारी की भावनाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और पारिवारिक, सामाजिक समस्याओं का यथार्थपरक विवेचन हो रहा है। आज नारी अपना जीवन अपने तरीके से जीना चाहती है। वह सामाजिक नैतिकता के स्थान पर वैयक्तिक मूल्य को अधिक महत्व देती है। उसका अपना वजूद है, उसके अपने सपने है, जिसे वह साकार करने का प्रयास कर रही है। समाज की ऐसी अनेक महिलाएँ साहित्य में प्रभावी रूप में प्रस्तुत हुई हैं।

नारी के अनुभव और नारी जीवन का बोध पुरूष से अनेक अर्थों में भिन्न होता है। वह अपनी निजता को अपने ढंग से व्यक्त करती है। स्त्री के निजी अनुभव, स्त्री ही स्वाभाविकता से लिख सकती है। वैसे भी कल्पना और यथार्थ परस्पर विरोधी तत्व

है। स्त्री की स्थितियों को पुरूष की कल्पना द्वारा लिखना कुछ अलग ही होता है और जब उन्ही स्थितियों को स्वयं स्त्री द्वारा वर्णित करना है तो इसमें अंतर होता है। हिंदी की सशक्त महिला लेखिका सूर्यबाला कहती है - "अनुभव यही कहता है कि लेखिकाओं का क्षेत्र अधिकतर घर और नारी मन रहा है जबकि पुरूष लेखन का घर बाहर दोनों। लेकिन हम इस क्षति की पूर्ति भी तो कर लेती है। नारी मन की अथाह गहराइयों में पैठकर इतना तो मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि नारी के अंदर इतने गूढ तिलस्म, गुफाएँ और प्राचीर है कि इन्हें भेद पाना आसान नहीं, जिनको जितनी सत्यता और ईमानदारी से नारी भेद सकती है- पुरूष नहीं।"[2] महादेवी वर्मा ने जहाँ एक ओर नारी के कारूणिक और मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत किए हैं, वही दूसरी ओर उन समस्त समस्याओं का हल भी प्रस्तुत किया है। मार्मिक चित्रणों के माध्यम से महादेवी ने पाठकों से करूणा की भीख नहीं माँगी है, क्योंकि उन्हें मालूम है कि परंपरागत सड़े हुए समाज की ये समस्याएँ भीख माँगने से नहीं सुलझेंगी। उनका व्यक्तित्व अपने आप में इतना पूर्ण है कि उन्होंने समस्याओं पर चतुर्दिक विचार कर उनका हल भी प्रस्तुत किया है। उनके शब्दों में "पुरूष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है, परंतु अधिक सत्य नहीं, विकृति के निकट पहुँच सकता है परंतु यथार्थ के अधिक समीप नहीं, पुरूष के लिए नारीत्व कल्पना है। परंतु नारी के लिए अनुभव। अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेंगी वैसा पुरूष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके।"[3] इस संदर्भ में प्रभा जी स्वयं लिखती है "व्यवस्था से मुक्ति की चाहना को अपने लेखन में जितनी शिद्दत से वह महसूस करती है या जितनी गहराई से तन्मय होकर अपने उत्पीड़न और शोषण को वह अभिव्यक्त कर पाती है, उतना पुरूष लेखन द्वारा संभव नहीं।"[4]

महिला लेखन के बारे में दो बातें महत्वपूर्ण हैं- एक तो यह कि स्त्री उपन्यासकारों ने हिंदी उपन्यास के परिदृश्य को ज्यादा संवेदनशील, स्नेहार्द्र और मानवीय बनाया है और उन्हीं के कारण यह कहीं अधिक बहुरंगी कलेवर हासिल करता रहा है। यह चीज खुद में स्त्री उपन्यासकारों की एक बड़ी उपलब्धि ही है। सन 1960 के पश्चात उपन्यास जगत में अनेक महिला उपन्यासकारों ने अपने

साहसपूर्ण मौलिक चिंतन के साथ जीवन की विषमताओं को विश्लेषित किया और विशेषकर भारतीय नारी जीवन के लगभग सभी सम्भावित पहलुओं को बड़ी बेबाकी के साथ प्रस्तुत किया है। आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास साक्षी है कि समकालीन लेखिकाओं ने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी प्रतिभा सिद्ध की है। श्यामचरण दुबे के अनुसार - " नारी को न पूजा की जरूरत है न ताड़ना की। वह सिर्फ ममता चाहती है। असहमति, विद्रोह और सुधार की परंपराओं ने न्याय की माँग उठाई। वे आंशिक रूप से सफल भी हुई।"[5]

प्रभा खेतान के उपन्यासों के केंद्र में नारी ही है। उनमें स्त्री मुक्ति की गुहार है। उनका यही लगाव उनके लेखन को अर्थ प्रदान करता है। प्रभा खेतान नारी विरोधी व्यवस्था का विरोध करके नए मूल्यों की प्रतिष्ठापना करना चाहती है। यहाँ समकालीन महिला लेखन में प्रभा खेतान का योगदान उपन्यास साहित्य को दृष्टि में रखकर किया जा रहा है।

6.1 समकालीन उपन्यासों में प्रभा खेतान का योगदान (महिला उपन्यासकारों केविशेष संदर्भ में) :-आजादी के बाद महिला उपन्यासकारों की बाढ़-सी आ गई हैं। हमने उनमें से कुछ महिला उपन्यासकारों को चुना है जो लेखन की दृष्टि से प्रभा खेतान की कोटि की है।

6.1.1 उषा प्रियंवदा :-

वर्तमान के नारी जीवन की विसंगतियों को आत्मसात करके उन्हें आधुनिक रूप प्रदान करने का श्रेय उषा प्रियंवदा को जाता है। उनके पात्रों में निराशाएँ, भय, संत्रास, व्याप्त है। उन्होंने **'रूकोगी नहीं राधिका'** में एक भारतीय युवती की व्दंव्दात्मक मन:स्थिति को चित्रित किया है। राधिका अपने पिताजी से बहुत प्यार करती है, परंतु उसके पिता अपनी ही बेटी की सहेली से शादी कर लेते है जिससे बेटी का हृदय आहत होता है। वह डैन के साथ शादी करके अमरिका चली जाती है। पर वहाँ से निराश होकर वापस आती है। बाद में अक्षय और मनीष से भी प्यार करती है। कहीं भी रहे अकेलापन तो उसे भोगना ही है। सांस्कृतिक टकराव और अकेलेपन की

त्रासदी इस उपन्यास में जीवित है। लेखिका ने यहाँ नारी को एक नई अर्थवत्ता प्रदान की है।

उषा प्रियंवदा का **'पचपन खम्भें लाल दीवारें'** उपन्यास अन्तर्मुखी, कुण्ठित, स्वतंत्रता और कर्तव्य के बीच छटपटाती भीरू सुषमा की करूण कहानी है। पक्षाघात से अशक्त पिता की वह सबसे बड़ी संतान है। घर, माँ-बाप तथा भाई-बहनों के लालन-पालन शिक्षा की चिंता से उसके यौवन के वर्ष बीतते चले जाते है। वह कभी अपने माँ-बाप को तो कभी परिस्थितियों को दोष देती है। वह लड़कियों के वसतिगृह में वार्डन के पद को सँभालती है। लोगों के उँगली उठाने तथा नौकरी छूट जाने के भय से वह नील से अलग होती है। अंत तक उसके भीतर का तूफान उसे उन्हीं पचपन खम्भों और लाल दीवारों वाले वसतिगृह में टिके रहने को बाध्य करता है।

'अंतर्वशी' उपन्यास में जीवन के जटिल प्रश्नों पर चिंतन किया गया है। इसमें हर वर्ग के स्त्री पात्रों को चित्रित किया गया है। उनके नारी पात्र परंपरा के बंधनों से मुक्त होने के लिए प्रयासरत है। आत्मनिर्भर एवं आत्मविश्वास पूर्ण जीवन जीने के लिए छटपटाती नारी का वर्णन इनके उपन्यास में पाया जाता है।

अपने नारी विमर्श के अनुकूल आधुनिक नारी की अस्मिता के रूप में उषा जी ने 'वाना' के चरित्र का विकास किया है। धार्मिक संस्कारों में पली बढ़ी वाना दांपत्य जीवन के आरंभ से ही पति शिवेश के प्रति वफादार नहीं रहती। वह राहुल को पाना चाहती है। वह शिवेश के प्रेम रहित यौनाचार से परेशान है, "कितनी हड़बड़ रहती है इन्हें, जुट जाते हैं अपने सुख में। पूरा कपड़ा अलग करने का समय भी नहीं लेतें।"[6] उषा जी ने राहुल और रति के सेक्स का मादक चित्रण करते हुए मर्यादा को तोड़ा है।

उषा जी के **'शेषयात्रा'** में भारतीय संस्कृति में पली-बढ़ी, सीधी-सादी, विनम्र एवं उच्च शिक्षित महिला पात्र 'अनु' है। अमरिका में स्थित 'प्रणव' के साथ उसका विवाह होता है। अनु के प्रति प्रणव तटस्थ एवं उदासीन रहता है। उसके चारित्रिक पतन की जानकारी अनु को अमरिका में पहुँचने पर होती है। वह प्रणव के लिए पायदान बने रहने के बजाए अपने पैंरो पर खड़े होने का प्रयत्न करती है। वह न ही

आत्महत्या करती है और न ही रखैल बनकर जीवन बिताती है। बल्कि एक सैनिक की तरह हार न मानकर जीवन से संघर्ष करती है। परदेश में अपना एक अलग वजूद स्थापित कर पुरूषों के वर्चस्व को चुनौती देती है। पति के वापस बुलाने पर भी वह अपने जीवन की शेष यात्रा अपने प्रेमी एवं वर्तमान पति दीपांकर चौधरी के साथ बिताने का निश्चय करती है। 'नीतू कौशल' उषा प्रियंवदा के उपन्यासों के बारे में कहती है, "उषा प्रियंवदा ने भारतीय व विदेशी सभ्यता के मूल्यों के अंतर को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है।"[7]

उषा जी ने आधुनिक नगर-बोध की उदासी, अकेलापन, ऊब आदि का अंकन अपने साहित्य में यथार्थ बोध के साथ किया है।

6.1.2 अलका सरावगी:-

अलका सरावगी ने नारी की संघर्षरत त्रासद स्थितियों का वर्णन किया है। उनकी **'कलिकथा वाया बाईपास'** इस उपन्यास में आजादी के आंदोलन से लेकर आज तक के बदलते जीवन मूल्यों को दर्शाया गया है। कलकत्ता में स्थित मारवाड़ी समाज के निर्माण उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, रीतिरिवाजों से लेखन की शुरूवात हुई है। मारवाड़ी समाज की नारियों की वैचारिक मानसिकता, उनकी पसंद-नापसंद, उनका पिछड़ापन एवं उनपर लगाए हुए बंधनों का इसमें चित्रण है। इसमें स्त्री की समस्याओं का सहानुभुति से चित्रण किया गया है।

6.1.3 मैत्रेयी पुष्पा:-

मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री की विवशताओं को न केवल समझा बल्कि उसे आक्रोश पूर्ण वाणी भी दी। इनका लेखन नारी विमर्श को एक नई पहचान और आयाम देने में सफल भूमिका निभा रहा है। इनके उपन्यासों में नारी विद्रोह और स्वाभिमान का जयघोष हुआ है। उनके सभी चर्चित उपन्यास नारी जीवन से जुड़ी समस्याओं से व्याप्त है।

उनके **'बेतवा बहती रही'** इस उपन्यास में बेतवा के कछहारों में स्त्रियों की समस्याएँ, उनके दुख को उजागर किया गया है। बेटी को पराया धन मानकर उसे शिक्षा से वंचित रखा जाता है। उर्वशी की सुंदरता उसके लिए अभिशाप बन जाती है।

शादी हेतु दहेज न जुटा पाने वाले पिता को देख उसका भाई अजित उसे बेचने का प्रयत्न करता है। उसका विवाह सिरसा में सर्वदमन से किया जाता है। विवाह के समय उसे बताया जाता है, "बिटिया आज से यह घर पराया है, तुम्हारा घर अब सिरसा में है।"[8] सर्वदमन की अचानक मौत हो जाती है। भाई अजित जमीन के लालच में अपनी बहन की शादी बूढ़े विदुर बरजोर से करवाता है। उसका बदला लेने हेतु उर्वशी, विजय की विधवा पत्नी का विवाह अपने छोटे भाई उदय से करवाती है। इस अपमान की वजह से उर्वशी का दूसरा बूढ़ा विदुर पति उसे जहर देता है।

भारतीय समाज व्यवस्था में लड़कियों को बचपन से चुप रहना सिखाया जाता है। फलस्वरूप अपने ऊपर ढ़ाये गये अनगिनत अत्याचारों को सहना ही उनकी नियति बन जाती है। लेकिन उर्वशी इस नियति को तोड़कर विकराल रूप धारण करती है।

'**इदन्नमम**' में तीन पीढ़ियों के पात्र एक दूसरे के समानांतर भी है और एक दूसरे के विरूद्ध भी। चेतना संपन्न स्त्री को आज भी परिवार और समाज के लिए संकट समझा जाता है। 'इदन्नमम' की मंदा एक सवाल पूछती है - "गाँव में ऐसे कितने पुरूष है जिन्होंने दूसरा विवाह किया है। इन पुरूषों से अटपटे प्रश्न कोई नहीं पूछता? इन्हें घर से क्यों नही निकाला जाता?"[9]

मैत्रेयी जी ने इस उपन्यास द्वारा कई मान्यताओं पर प्रहार किया है। यह एक दोहरा मानदंड है, कि पुरूष बहु-विवाह कर सकता है, एक साथ कई पत्नियाँ रख सकता है, किंतु यदि कोई स्त्री विवाह तो दूर, किसी पर पुरूष के साथ संबंध भी स्थापित कर ले, तो समाज अपने विषाक्त बाणों से उसे छलनी कर डालता है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने नारी के कभी न खत्म होने वाली संघर्ष की कहानी प्रस्तुत की है। इसमें कुछ पुरूष पात्र इस संघर्ष में नारी को सहयोग देते है तो कुछ उसका शोषण करते है। इस उपन्यास की मंदा अपने आत्मविश्वास और दृढ संकल्प से पुरूष वर्ग को चुनौती देती है। वह गाँव के उद्धार के लिए अपनी खुशियाँ समर्पित कर देती है। इस उपन्यास के शीर्षक का अर्थ ही यह है कि यह जो है मेरा न होकर परमेश्वर का है, अत: वह अपने जीवन को भी अपना न मानकर उसे गाँव के लोगों को समर्पित करती है।

'चाक' उपन्यास नारी के संघर्ष एवं शोषण को व्यक्त करता है। चाक की कथा का केंद्र अतरपुर गाँव है।यहाँ पुरूष वर्चस्व एवं अहंकार के कारण नारियाँ शोषित रही है। रूक्मिणी आत्महत्या कर लेती है। रामदेई कुए में कूद जाती है। नारायणी करबन नदी में कूद जाती है। पति द्वारा चंदना की हत्या होती है। रानी मंझा को समाज के द्वारा मृत्युदंड की सजा सुनाई जाती है। इसमें सारंग की विद्रोही स्वर में लड़ी गई न्याय और अधिकार की लड़ाई चित्रित की गई है। इस उपन्यास की 'रेशम' विधवा है परंतु जब उसे किसी के द्वारा गर्भ रह जाता है तब वह सोचती है कि रीति-रिवाजों ने, शास्त्र पुराणों ने, समाज ने उसे विधवा के रूप में देखना चाहा है। वह भी एक युवती है। इसको सदैव नजर अंदाज किया है। वह अपनी सास से स्पष्ट शब्दों में कहती है - माइयों! तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गई हो। मेरे चालचलन की झंडी फहराना जरूरी है? बिरथा ही छानबीन करने में लगी हो। आज को तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पूछती कि तू किसके संग सोया था? अब उसकी बाँह गह ले। मेरे पीछे तेरहीं तक का भी सबर न करता और ले आता दूसरी। तुम खुश हो रहीं होती कि पूत की उजड़ी जिंदगी बस गई। पर मेरा फजीता करने पर तुली हो।"[10]

'अल्मा कबूतरी' इस उपन्यास में अल्मा और कदम बाई के जीवन की दर्दनाक कहानी है। कदम बाई के सौंदर्य पर अभिभूत होकर मंसाराम उसका बलात्कार करता है। अल्मा के पिता रामसिंह की मृत्यु के बाद उस पर बहुत से संकट आते हैं। लेकिन वह सभी कठिनाइयों का सामना करते हुए राजनीति में प्रवेश पा लेती है।

'विजन' में भी मैत्रेयी जी ने नारी के उच्च शिक्षित होने के बावजूद होने वाली दर्दनाक परिस्थिति व्यक्त की है। नेहा एक सफल डॉक्टर है। फिर भी उसके पति से हुई गलती का आरोप उसके ससुर (आर. पी. शरण) नेहा पर लगाते है। जिससे वह मानसिक संतुलन खो बैठती है। इस उपन्यास की डॉ. आभा शालीन, सुशील, संस्कारमयी एवं विद्रोही है। वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अपनी शादी भी दाँव पर लगा देती है। मैत्रेयी जी के बारे में नीतू कौशल कहती है, "मैत्रेयी पुष्पा जी ने मध्यमवर्गीय परिवारों के मूल्यों को प्रस्तुत कर विद्रोह की स्थिति को उभारा है।"[11]

6.1.4 मालती जोशी:-

मालती जोशी मराठी भाषी होते हुए भी हिंदी में सशक्त लेखन करने वाली अग्रगण्य लेखिका है। मालती जी ने दांपत्य जीवन के साथ आधुनिक नारी की समस्याओं को चित्रित किया है। सरल भाषा मनोरम शैली, मनोवैज्ञानिक मधुर स्पर्श और पारिवारिक संबंधो की मृदुल संवेदनशीलता उनकी रचनाओं के मुख्य गुण हैं। उनके उपन्यास एक ओर तो परंपरा का निर्वाह करते हैं तो दूसरी ओर आधुनिकता का।

उनका हर उपन्यास अंत में उदारता की भावभूमि पर समाप्त होता है। उन्होंने अपनी अनुभूतियों को ही कागज पर उतारा है। उनका रचना संसार उनकी अन्य समकालीन लेखिकाओं से किंचित भिन्न है। वह अपने उपन्यास साहित्य में नारी जीवन के आवश्यक नवजागरण और परिवर्तन को चित्रित करती है। उनके उपन्यास नारी जीवन की पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं को मुखरित करते है।

'ज्वालामुखी के गर्भ में' इस उपन्यास की दो बहनों ने अपनी और अपने परिवार की जिंदगी कब्रिस्तान जैसी वीरान बनाकर रखी है। दोनों को अपने-अपने दुख इतने प्यारे थे कि उनसे किसी का सुख देखा नहीं जाता। मीता की मौसी पर उसके पिता ने डोरे डाले और जब वह गर्भवती हो गयी तो उससे गर्भपात कराने का अनुरोध किया। पर वह इन्कार करती है। मीता की माँ अपनी बहन की शादी अपने पति के साथ करके जिंदगी का रूख बदल सकती थी। पर ऐसा न करके एक मामूली पंडित के बेटे से उसकी शादी करवा देती है। जायदाद की पूरी नकेल मौसी के हाथ आने से मीता के भाई-बहन स्वयं को अनाथ महसूस करते है और मौसा और उनका पुत्र निराश्रित। परिवार में सब कुछ होने पर भी कोई सुखी नहीं था अत: मौसी की बहू घर को छोड़ किराये के मकान में जाना चाहती है ताकि तीसरी पीढ़ी सुख से जिये। उसका पति सिर्फ रबर का बबुआ न होकर मर्द बने।

'पाषाण युग' में लेखिका ने विधुर और अनमेल विवाह के प्रश्नों को उठाया है। साथ ही नारी की मनोव्यथा, मनोभावनाओं और मनोवृत्तियों को उजागर किया है। इसमें नीरू अपने शिक्षक से विवाह करती है। यद्यपि दोनों की उमर में अंतर है।

स्वभावगत विशेषताओं में वैषम्य है। फिर भी वह मूक होकर गृहस्थी धर्म का निर्वाह करती है। उसकी पति परायणता भारतीय स्त्री का आदर्श और पीड़ा है।

'समर्पण का सुख' की राजश्री विवाह पूर्व अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं के लिए नौकरी करती है। विवाह के पश्चात पति भी उसी के धन पर जीवन व्यतीत करता है। राजश्री "जीवन भर सबको सहारा देते-देते थक गई और खुद एक सहारे के लिए फड़फड़ा रही थी।"[12]

'ऋणानुबंध' उपन्यास में मध्यमवर्गीय परिवार का चित्रण है। इसकी नायिका निर्मल एक आदर्श भारतीय पत्नी है जो परंपराओं का निर्वाह करती है। अपने पति और मंदा के संबंधों को मूक होकर स्वीकार करती है। उनकी संतान को पुत्रवत प्रेम करती है। उसे घर में स्थान दिलाती है। दस साल बाद बच्चे की मौत के सदमे की सच्चाई मंदा सबके सामने प्रकट करती है तब पति और बच्चे उसे घर से निकाल देते है किंतु निर्मल रोक लेती है।

'सहचारिणी' में नीलम और योगेश का संबंध विच्छेद हो जाता है। नीलम अनुभव करती है, "पत्नी-पति के बीच जब संवाद शेष हो जाते हैं, तब दांपत्य जीवन कितना भयावह हो जाता है। पर इन दिनों यही मेरा संबल था, सांत्वना थी --- हमारी विचारधारा अलग थी, हमारी आचार संहिता भिन्न थी, जीवन के प्रति दृष्टिकोण में अंतर था और हमारे नैतिक मूल्य में कोई समानता न थी।"[13] इसमें लेखिका ने संवेदनशील नारी की मानसिकता को व्यक्त किया है।

'राग-विराग' की कल्याणी गायिका है परंतु विवाह के पश्चात अपनी गायन कला को छोड़कर पति एवं परिवार के प्रति समर्पित हो जाती है। वह नौकरी कर परिवार के आर्थिक पक्ष को मजबूत करती है। परिवार में सास और ननद द्वारा अपमानित होकर भी वह शांत बनी रहती है। उसका जीवन भारतीय मध्यवर्ग नारी की मानसिकता से युक्त है।

'पटाक्षेप' में लेखिका ने प्रेम और विवाह के उलझे स्वरूप को उजागर किया है।

'निष्कासन' मनोवैज्ञानिक उपन्यास है, जिसमें माता एवं पुत्री की मानसिकता को चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में विधवा विवाह एवं अनमेल विवाह की समस्या का समाधान ढूँढा गया है। पति की मृत्यु के पश्चात मिसेज नरेंद्र असहाय-सी हो जाती है। पुत्री पर गंगाधर द्वारा किया आक्रमण उसे मानसिक और शारीरिक रूप में पंगु बना देता है। गंगाधर आत्मग्लानि में आत्महत्या कर लेता है। पुत्री इस आत्महत्या के लिए स्वयं को दोषी मानकर मानसिक रूग्ण हो जाती है।

'सहमे हुए प्रश्न' उपन्यास दांपत्य जीवन की समस्या पर आधारित है। गलतफहमी कलह की जड़ है। पति-पत्नी का स्वभाव वैषम्य दांपत्य जीवन को कटु बना देता है। यही इस उपन्यास का मूल कथ्य है।

'परिणय' उपन्यास की प्रमुख पात्र सीमा डॉक्टर जीतू से हुए रिश्ते को ठुकराकर सगाई से पहले प्रेम को महत्व देकर अपने फुफेरे भाई के साथ भाग जाती है। इसमें आज की आधुनिक नारी के रूप को दर्शाया गया है। जो संस्कारों से भी ज्यादा महत्व प्रेम को देती है।

इस प्रकार मालती जी को नारी मन के सूक्ष्म स्पंदनों की सही पहचान है। नारी होने के कारण जिस परपीड़न को वह अनुभव करा सकी थी, उसी को उन्होनें अपने पाठकों तक पहुँचाया है।

6.1.5 ममता कालिया:-

ममता कालिया की उन्मुक्तता और तेज मिजाजी की पहचान उनके यौन प्रसंगों से होती है। विद्रुपताओं और भ्रष्टाचार पर वे अधिक दृष्टिपात करती हैं। सिद्धांतों से अधिक व्यवहारिकता पर उनके चिंतन का जोर है। **'बेघर'** इस उपन्यास में लेखिका ने संजीवनी की बेबसी जाहिर की है। इसमें लेखिका ने यौन संबंधों का खुला चित्रण किया है। परमजीत संजीवनी से कहता है - "अकेले में मैं तुम्हारे तलवे सहलाकर तुम्हारे बाल खोलकर तुम्हारा ब्लाऊज मसलकर तुम्हें एक ही पल में लड़की से औरत बना दूँगा।"[14] इसमें लेखिका ने प्रश्न उठाया है कि पुरूष के लिए समाज में कोई पाबंदी नहीं है। वह विवाहपूर्व या विवाहोपरांत अन्य नारियों से संबंध बनाये रख

सकता है, कोई उस पर उंगली नहीं उठाता, किंतु पत्नी पर वह एकाधिकार ही चाहता है।

'नरक-दर-नरक' में नयी गृहस्थी की यातनाओं का विस्तृत वर्णन है। पति-पत्नी के प्रेमहीन संबंधों को इसमें उजागर किया गया है। नायक विनय गुप्ता की पत्नी 'सीता' कॉलेज में प्रवक्ता है। सीता पति के शंकालु स्वभाव के कारण मानसिक दृष्टि से दुखी है। पति का बार-बार उसके कॉलेज में फोन कर उसकी जानकारी लेते रहना उसका मानसिक छल ही है।

6.1.6 नासिरा शर्मा:-

नासिरा शर्मा हिंदी साहित्य का एक ज्वलंत हस्ताक्षर है। उन्होंने अपने अनुभव जगत को रचनात्मकता के केंद्र में रखकर उसे देशकाल के ओर-छोर तक विस्तृत कैंनवास पर फैला दिया है। मुस्लिम समाज की नारी की बेबसी और लाचारी का चित्रण हिंदी में सिर्फ नासिरा जी ने ही किया है।

अपने **'शाल्मली'** उपन्यास में लेखिका ने एक उच्च पदस्थ अफसर के दांपत्य संबंधों में तनाव की कथा को प्रस्तुत किया है। 'शाल्मली' में आज आधुनिक युग में भी पुरूषप्रधान समाज व्यवस्था का नारी की ओर देखने का दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। निरंतर प्रयास कर शाल्मली उच्च पद प्राप्त करती है। उसे ज्यादा पढ़ाने के विरोध में उसकी माँ है। लेकिन उसके पिता की सोच अलग है। वह औरत की अपनी अलग पहचान बनाने में विश्वास रखते है।

विवाह के पश्चात नरेश उसे हर वक्त अपमानित करता है। उनके वैवाहिक जीवन में कटुता आने लगती है। नरेश के व्यवहार से तंग आकर एक पल वह अपने विवाह करने के निर्णय पर पछताती है लेकिन फिर सँभल जाती है। "काश मैं विवाह न करती, फिर बिना विवाह किए इस अनुभव पर पहुँचती भी कैसे! विवाह करने का वह अपना अधिकार क्यों छोड़ती? जीवन को आकार देने की चेष्टा तो अब भी कर सकती है। जो गुजर गया, सो गुजर गया।"[15] इस तरह उसके मन में व्दंव्द उभरता है, पर वह आत्मविश्वास से आगे बढ़ती है। नरेश उस पर अपना अधिकार समझकर उसकी इच्छा के विरूध्द उससे दैहिक सुख प्राप्त करने की कोशिश में जानवर बन

जाता है। वह कहता है - "तुम जानना चाहोगी पुरूष की दृष्टि में औरत क्या है? भोगने की वस्तु--- वही उसकी पहचान है। इसलिए तुम औरत की तरह रहो, इसी में तुम्हारा उद्धार है और घर का कल्याण और गृहस्थी का सुख।"[16]

शाल्मली स्वावलंबी एवं स्वतंत्र स्त्री है, जो अपने अधिकार को लड़कर लेना जानती है। वह नरेश से कहती है, "मैं तुम्हारी छाया, तुम्हारी प्रतिध्वनि, तुम्हारा विस्तार नहीं हूँ नरेश। इस भ्रम में मैं नहीं जीती। इसे मेरी कमी कह लो, या खूबी कि मैं अपनी अच्छाई और बुराई दोनेां को जानती हूँ। यह भी जानती हूँ कि मैं कोरा कागज नहीं थी, जिस पर तुम अपने अधिकार का हस्ताक्षर कर सकते।"[17]

शाल्मली नरेश को हर तरह से समझाने का प्रयास करती है परंतु नरेश उसे कहता है, "पति का अधिकार केवल धर्मग्रंथों में नहीं लिखा, तुम्हारे संविधान में भी उस सरकार द्वारा लिखा गया है, जिसकी चाकरी करती हो तुम--- नियम और धर्म केवल कागज पर लिखने के लिए होते हैं या फिर तुम औरतों के लिए बनाए जाते हैं। इनसे हटकर एक और कानून होता है, जो हम मर्दों के बीच प्रचलित होता है।"[18]

जब उसकी सहेली संबंध-विच्छेद की सलाह देती है तब वह यही उत्तर देती है - "औरतों के पास दो ही अभिव्यक्तियाँ हैं, सर झुका देना या समस्या को अधूरा छोड़ सर कटा लेना मेरा विश्वास न घर छोड़ने पर है, न तोड़ने पर, न आत्महत्या पर है, न अपने को किसी एक के लिए स्वाहा करने में है। मैं तो घर के साथ औरत के अधिकार की कल्पना भी करती हूँ और विश्वास भी। अधिकार पाना यानी 'घरनिकाला' नहीं और घर बना रहने का अर्थ 'सम्मान' को कुचल फेंकना नहीं है।"[19]

इस प्रकार शाल्मली प्राचीन भारतीय नारी- आदर्श और आधुनिकता में तालमेल बिठाती है। वह अपने नाम के समान सेलम वृक्ष के समान कोमल हल्की बनकर अपने संपर्क में आनेवाले हर किसी को जीवन दान देने का विचार करती है। दुबारा जीने की ललक निर्माण कर अपने जीवन के ऋतु में परिवर्तन करके अपने जीवन में वसंत लाती है। तलाक का मार्ग अपनाकर वह परिस्थिति से भागना नहीं चाहती, बल्कि अपने जीवन में परिवर्तन लाकर स्थितियों को कुछ हल्का बनाने में सफल होती है।

'ठीकरे की मंगनी' में मुस्लिम समाज की रूढ़ि-परंपराओं को तोड़कर अपना अस्तित्व निर्माण करने वाली नारी का चित्रण किया गया है। इसमें उन्होंने औरत को तमाम पुरानी परंपराओं के खिलाफ खड़ा किया है। पुरूषप्रधान समाज नारी को अपने अनुरूप ढालने का निरंतर प्रयास करता आ रहा है। नारी भी अपने-आपको पुरूषों द्वारा निश्चित सांचे में ढालती है। इसके विरोध में अगर कोई नारी अपने-आपको प्रस्तुत करती है तो वह समाज की दृष्टि में हीन बन जाती है।

उपन्यास की नायिका महरूख के पैदा होते ही, उसके मौसेरे भाई रफत से उसकी मंगनी कर दी जाती है। चार पुश्तों के बाद जन्मी महरूख से सभी प्यार करते है, लेकिन वह जैसे-जैसे बड़ी होती जाती है उस पर पाबंदियाँ लगायी जाती है। उनका मत है - "लाख वह गैर नहीं मगर कुँआरी लड़की दूसरे शहर यूँ पढ़ने भेजना.. खानदान में कोई इस बात को हज़म नहीं कर पाएगा। एतराज की बौछार से हम बच नहीं पाएंगी।"[20]

महरूख की माँ उसे पढ़ाने के पक्ष में है। वह पति को समझाते हुए कहती है - "मैं औरत हूँ खूब अच्छी तरह से जानती हूँ कि इस नए दौर में औरत के लिए मजबूती क्या होनी चाहिए। जमाने के कहने से क्या हमने लड़कियाँ स्कूल से निकलवा ली थी? ---- मगर तालीम से समझ तो बढ़ी, अपना हक तो पहचाना-गलत चीजों की तरफदार तो मैं भी नहीं हूँ, मगर लड़की अपना अच्छा-बुरा समझे यह अक्ल तो तालीम ही दे सकती है।"[21]

उसका पति रफत उच्च शिक्षा हेतु अमरिका जाता है। वही शादी कर लेता है। यह सुनकर महरूख पूरी तरह टूट जाती है। वह अपनी पढ़ाई छोड़कर गाँव में बच्चों को पढ़ाने जाती है। वहाँ वह नौकरी पेशा स्त्री की समस्याओं से गुजरती है। उन समस्याओं को झेलकर वह अपनी अलग पहचान बनाती है। रफत मियाँ वापस आकर फिर से महरूख के सामने विवाह का प्रस्ताव रखते है तब वह रफत से कहती है, "मैं जगह चीज या मकान नहीं थी, रफत भाई, जो वैसी की वैसी ही रहती। मैं इन्सान थी कमजोरियों का पुतला। मैंने आपको जिस भरोसे भेजा था, आप भी वैसे कहा रह पाए? कुछ चींजें कितनी बेआवाज टूटती है। मैं बेआवाज टूटी थी, किरच-

किरच होकर बिखरी थी। बड़ी मुश्किल से अपने को चुना है, समेटा है, जोड़ा है तब कहीं जीने के काबिल हुई हूँ। मुझसे अब मेरी यह जिंदगी वापस मत छीनिए। अब मेरे पास समझ है। मैं अपना भला बुरा समझ सकती हूँ। ठोस जमीन पर ठोस जिंदगी जीना चाहती हूँ। मेरी जिंदगी पर सिर्फ मेरा हक है।"[22]

महरूख अपना पूरा जीवन जनकल्याण को समर्पित करती है। उसके भाई-बहन उसे अपना आदर्श मानते हैं। जब उसे घरवाले लेने आते है तब इन्कार करते हुए वह उन्हें कहती है - "एक घर औरत का अपना भी तो हो सकता है, जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग, उसकी मेहनत और पहचान का हो। मेरा अपना घर वहीं पुराना है, जहाँ मैं पिछले तीस साल रही हूँ।"[23]

भारतीय नारी अपने परंपराओं से जुड़ी रहना चाहती है। इस संबंध में नासिरा शर्मा का मत है, "भारतवर्ष में जितनी बुद्धिजीवी महिलाएँ थीं या हैं उतनी, संसार के किसी देश में नहीं है, मगर यह सारी महिलाएँ पहले माँ, बहन, बेटी, पत्नी है और फिर इंजीनिअर, डॉक्टर, लेखक, पायलट और मंत्री है। जिन औरतों का विवाहित जीवन सुखमय नहीं है समाज उन्हें आदर की दृष्टि से नहीं देखता भले ही पद के कारण सम्मान करना मजबूरी है। यह अपने में गलत सोच है, मगर हिंदुस्थान के समाज का यथार्थ यही है।"[24]

नासिरा जी ने समकालीन नारी जागृत होने के कारण हर क्षेत्र में किस तरह कार्यरत है यह बताते हुए कहा है - "यह सदी वास्तव में महिला सदी है, जिसमें औरत हर क्षेत्र में न केवल मर्द के संग कदम से कदम मिलाकर चली है, बल्कि कुछ क्षेत्रों में मर्द से आगे निकलकर उसने इस तर्क को साबित कर दिया कि मर्द और औरत के दिमाग में कोई फर्क नहीं होता।"[25]

6.1.7 मेहरून्निसा परवेज:-

परवेज जी के पास जिंदगी का व्यापक अनुभव है। आदिवासी, पिछडी, अशिक्षित औरतों को उन्होंने अपने उपन्यासों का आधार बनाया है। स्त्री की समस्याओं को उन्होंने अपने उपन्यासों में उजागर किया है। लेखिका ने प्रेम और सेक्स को अलग नहीं समझा। बदलते संबंध, टूटते मूल्य, बदलती दृष्टियाँ, छिन्न-भिन्न होती

आस्थाएँ, विश्वास लेखिका ने प्रस्तुत किए है। एक पुरूष और दो स्त्रियाँ या एक स्त्री दो पुरूष इस प्रकार का त्रिकोण वह बनाए चलती है। **'आँखो की दहलीज'** की नायिका अपने बांझपन को सहन नहीं कर पाती और अपने पति की शादी करवा देती है।

'उसका घर' उपन्यास में नारी की बेबसी, लाचारी को रेश्मा और ऐलमा के माध्यम से चित्रित किया गया है। विजातीय विवाह का विरोध भी नारी के प्रति एक प्रकार का शोषण है। रेश्मा विजातीय माता-पिता की संतान है। माँ की इच्छा है कि वह ईसाई लड़के से विवाह करें। जबकि रेश्मा देव को चाहती है। जब माँ देव को चमार कहकर संबोधित करती है तो रेश्मा माँ के प्रति विद्रोह करती हुई कहती है, "तुम जैसी चुडैलनी माँ दुनिया में दूसरी नहीं होगी। क्या तुमने मुझे भी ढोर चमार से जन्मा था।"[26] परिणाम स्वरूप रेश्मा आजीवन इस विरोध को मानसिक तनाव के रूप में अनुभव करती है। 'अहूजा' एक तलाक शुदा अफसर है। ऐलमा परिस्थितियों से मजबूर होकर अहूजा के सामने बार-बार समर्पित होती है।

यही कारण है कि ऐलमा अस्वस्थ होने के कारण पति द्वारा तलाक की इच्छा को स्वीकार कर लेती है। वह पति की इच्छा के विरूद्ध जीवन ढोना नहीं चाहती - "पत्नी को भीख में माँगा हुआ अधिकार कभी सुखी नहीं रखता ---- रही अदालत जाने की बात तो पति-पत्नी में यदि दरार पड़ जाये तो दुनिया की कोई अदालत उसे जोड़ नहीं सकती।"[27]

इस उपन्यास में 'सोफिया' पुरूष से घृणा करनेवाली और उन पर तीव्र प्रहार करनेवाली नारी पात्र है। वह ऐलमा को समझाती है, "ऐलमा, औरत प्यार के लिए भटकती है, पर उसे प्यार नहीं मिलता। औरत हमेशा मर्द के घर का सुख होती है। मैंने कितने मर्द बदले है, पर क्या उन्होंने मुझे प्यार दिया? नहीं, सब शरीर चाहते है।"[28] ऐलमा तलाक के पश्चात अपने स्वार्थी, क्रूर, नीच भाई के साथ रहती है। वह भी अपनी तरक्की हेतु बहन को अपने बॉस को सौंपता है। वह इस अत्याचार को चुपचाप सहन करती है।

'अकेला पलाश' में भी नारी के शोषण को व्यक्त करने के साथ-साथ आदिवासी स्त्रियों का दयनीय जीवन, पति का पुरूषत्व, पत्नी का हेाने वाला यौन शोषण, नारी की अपने अस्तित्व के लिए चल रही लड़ाई एवं नारी की यौन आकांक्षा को लेखिका ने उजागर किया है।

तहनीमा संघर्षशील नारी है। वह एक महिला संगठन की अध्यक्षा है परंतु उसका पति अहंकारी है। वह पत्नी के उच्च पद को देखकर दु:खी होता है एवं बार-बार उसका अपमान करता है। डॉ. अमर ज्योती कि शब्दों में - "भारतीय समाज में ऐसी असंख्य नारियाँ विद्यमान है जो पति के अन्याय पूर्ण अत्याचारों को मौन धारण करके सहन करती हुई अपना संघर्ष आजीवन जारी रखती है। स्त्री का यह मौन संघर्ष जब तक मुखर नहीं होगा, समाज में स्त्री शोषण के विरूद्ध अपेक्षित चेतना कदाचित जागृत नहीं होगी।"[29]

तहनीमा के जीवन में 'तुषार' आता है। प्रारंभिक प्रेम प्रदर्शन का अंत उसके विश्वासघात से होता है। तहनीमा एक बार फिर टूटती है किंतु उसकी टूटन उसे हौसला भी प्रदान करती है। वह स्वयं को बिखरने नहीं देती। यही स्त्री का संघर्ष है। जिस जगह हम टूटे हैं जहाँ हमारे पैर काट लिए गए हैं, वहीं पर हमें खड़े होना है, अपने को सँभालना है। तुषार समझता है, हम टूटकर मिट्टी में मिल जायेंगे, पर नहीं हम यहीं जीकर हंसकर उसे दिखायेंगे। तहनीमा की यह प्रतिक्रिया उसकी मानसिक दृढता को दर्शाती है। अत: इतनी दृढता, आत्मविश्वास के बावजूद वह अपने जन्मजात संस्कारों से अलग नहीं हो पाती। पति के अन्यायपूर्ण दुर्व्यवहार को सहते हुए अपने बच्चों के लिए उसी जीवन को स्वीकार करने को वह विवश हो जाती है।

'कोरजा' इस उपन्यास में संपूर्ण कथ्य की संरचना, जिंदगी की कड़वाहट, आर्थिक जटिलता, निम्न मध्यमवर्गीय ग्रामीण मुस्लिम परिवार के आँगन में होती है। लेखिका ने इस उपन्यास में आम आदमी की आर्थिक पीड़ा को समझाया है। धन के बल के आधार पर प्रतिष्ठा प्राप्त की जा सकती है। इसी सत्य को इसमें अभिव्यक्त किया है - "इज्जत ? आज के जमाने में इज्जत सिर्फ पैसे वालों की है। पैसे से ही दुनिया में इज्जत है। पैसा पास है, तो सब पूछेंगे, वरना कोई नहीं।"[30]

तलाक की प्रक्रिया से गुजरना स्त्री के लिए अत्यंत कष्टदायक होता है। इसलिए इस उपन्यास की नायिका फातमा पति को तलाक देना नहीं चाहती। वह यातनाओं को झेलकर भी पति के संग जीवन व्यतीत करना चाहती है।

इस उपन्यास में आए समस्त नारी पात्र विवश है। परिस्थितियाँ उन्हें जैसा चाहे वैसा नचाती हैं। "सेक्स समस्या का एक नया रूप भी यहाँ वर्णित है। कहीं बाप की जवान बेटी पर नजर है, कहीं माँ-बेटी एक ही पुरूष से जुड़ी है और कहीं आर्थिक मजबूरियों के कारण नारी देह का खुला क्रय विक्रय है।"[31] **'पत्थरवाली गली'** नामक उपन्यास में 'जेबा' को केंद्र में रखकर पुरूष का नारी के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

6.1.8 चंद्रकांता -

चंद्रकांता जी के उपन्यासों में नारी जीवन तथा उससे जुड़ी असंगतियों, विसंगतियों, असहमतियों, टकरावों, छटपटाहटों, रूग्णताओं, पीड़ाओं एवं करूणावर्त पुकारों को अभिव्यक्ति दी गई है।

इनके **'ऐलान गली जिंदा है'** उपन्यास की नायिकाएँ अपने अकेलेपन की ऊब से दु:खी होकर अन्य पुरूष से संबंध स्थापित करती है। शरीर सुख पाने के लिए वे कोई बंधन नहीं स्वीकारती। साथ ही इसमें विधवा भाभी का जीवन प्रस्तुत किया गया है। सुहागन का जीवन व्यतीत करने की लालसा रखनेवाली विधवा नारियाँ सामाजिक प्रतिबंध के कारण अपनी इच्छा का दमन कर लेती है। परिणाम स्वरूप वह कुण्ठित हो जाती है। इस उपन्यास की दिव्या तीन बहनों के पालन-पोषण में असहाय पिता की आर्थिक सहायता करने हेतु नौकरी करती है। वह पर्यटन विभाग में है, जहाँ संकोच और भय को छोड़कर पर्यटकों के साथ आत्मीयता स्थापित करनी पड़ती है।

'बाकी सब खैरियत है' में ऋता अपने विवाह के संबंध में कहती है- "मुझे ऐसा वर चाहिए जहाँ मेरी 'आइडेंटिटी' बनी रहे। तुम्हारी तरह मैं हर बात में समझौते नहीं करूँगी। जितने दिन जिऊँगी, अपने सोच के मुताबिक जिऊँगी।"[32]

'अर्थांतर' में नारी जीवन से जुड़े जो नैतिक मूल्य है, उसमें नवीनता लाने का प्रयास है। इस उपन्यास की नायिका अपने भरे-पूरे घर में अकेलापन एवं अजनबीपन महसूस करती हैं। वह अन्य औरतों की तरह सती-सावित्री बनकर, तुलसी के सामने दीप जलाकर या पति की हर इच्छा पूर्ण करने वाली गृहिणी बनकर नहीं जी सकती। इन सबका परिणाम यह होता है कि उसका संस्कारक्षम मन विद्रोह करने की सोचने पर मजबूर होता है। वह अपने अस्तित्व को लेकर पुरानी परंपराओं को झेलने की अपेक्षा जीने का अर्थ खोजने का निश्चय करती है। **'अंतिम साक्ष्य'** उपन्यास में भी नारी की नए जीवन की तलाश और अपने अस्तित्व को पहचानने के प्रयास को अंकित किया गया है।

6.1.9 मृदुला गर्ग -

मृदुला गर्ग जी के उपन्यास चरित्र प्रधान एवं मनोवैज्ञानिक है। उन्होंने अपने नानाविध अनुभवों से समृद्ध होकर सशक्त, अर्थपूर्ण एवं कलात्मक साहित्य का सृजन किया है। उनके कथा सृजन के केंद्र में नारी है। वे नारी के यौन और प्रेम विषयक आधुनिक जीवन दृष्टिकोण को खुलेपन के साथ रेखांकित करती हैं।

'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास के केंद्र में मनीषा और जतिन है। जतिन मनीषा को समय नहीं दे पाता। मनीषा सोचती है, "जिस आदमी को उससे दो बात करने की फुर्सत नहीं है उससे कैसा लगाव। जो रिश्ता रात के अँधेरे में जन्म लेता है और चंद घंटे कायम रहकर दिन के उजाले के साथ खत्म होता है। उसे तोड़ने में कैसा संकोच।"[33] इसकी परिणति यह होती है कि दोनों में संबंध विच्छेद होता है। वह मधुकर की ओर आकर्षित होकर अनुभव करती है।

मनीषा बाद में फिर जतिन से भी दैहिक संबंध स्थापित करती है। वह व्दंव्द से घिरकर सृजनात्मक में ही 'निजता' या 'स्व' की तलाश करती है। इस प्रकार पति जतिन और प्रेमी मधुकर दोनों से असंतुष्ट मनीषा के जीवन में अस्थिरता आती है। इसमें भारतीय दांपत्य जीवन का संघर्ष और असंतोष चित्रित हुआ है। लेखिका ने इसमें यह बताने की कोशिश की है कि विवाहिता स्त्री का अन्य पुरूष से प्रेम केवल

आकर्षण है। समय के साथ वह नष्ट हो जाता है तथा जीवन का लक्ष्य 'कार्य' है 'प्रेम' नहीं।

'चितकोबरा' में वर्णित विवाहेत्तर प्रेम प्रसंग में पात्रों की व्यक्तिवादी भोगवादी जीवन दर्शन को अभिव्यक्त किया है। लेखिका ने शरीर सुख को आत्मिक प्रेम के लक्ष्य तक पहुँचने का पड़ाव माना है। इसमें मनु के माध्यम से ऐसी नारी को चित्रित किया है, जो प्रेमी या पति में से किसी एक को चुनने की दुविधा से पूरी तरह से दूर है। वह दोनों का भी साथ निभाती है। नारी को अपनी इच्छा के अनुरूप अपने जीवन को सार्थक बनाने की जो स्वतंत्रता होनी चाहिए यह इस उपन्यास में दर्शाया गया है।

इसमें काम-संबंधों का भी मुक्त चित्रण हुआ है। बोल्ड लेखिका होने के कारण इस उपन्यास की मनु कहती है, "महेश ने मेरी देह में प्रवेश कर लिया है। पुरूष और स्त्री का संभोग --- कुछ नहीं है यह --- महज एक गढ़े को भर देने की उत्कट लालसा, जो हर मानव को विरासत में मिली है।"[34] मनु रिचर्ड और महेश दोनों के साथ शारीरिक और मानसिक धरातल पर समझौता कर लेती है। ऐसा करने में वह कोई संकोच या असामाजिकता का अनुभव नहीं करती। इस उपन्यास में गर्ग जी ने आज के समाज की बौद्धिक सभ्यता में पले ऐसे पात्रों की मानसिकता को प्रकट किया है जो प्रेम और नैतिकता के भिन्न धरातलों को एक साथ अपने जीवन में स्वीकार कर, नैतिकता के अपने मानदंड बनाते चलते है।

'कठगुलाब' उपन्यास में नारी का पुरूष द्वारा होनेवाला आर्थिक, शारीरिक और बौद्धिक शोषण तथा प्रतिक्रिया स्वरूप आत्मनिर्भरता तथा पुरूष सत्ता के समानांतर अपने को सिद्ध करने के लिए की गई नारी की कोशिश को चित्रित किया है। स्मिता, मरियान, नर्मदा, नमिता आदि पात्र समस्त उपन्यास में विभिन्न स्तरों पर संघर्षरत है, जो आगे चलकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करते हैं। आज सदियों से शोषित नारी संगठित होकर पुरूष की सत्ता के विरोध में खड़ी हो रही है। मृदुला जी ने इसमें इस संगठन को सफलता से अंकित किया है।

इसमें असीमा की माँ भारतीय नारी का एक आदर्श है। पारिवारिक मान्यताओं में विश्वास करने वाली वह पति के दूसरा विवाह करने पर दु:खी अवश्य होती है।

परंतु विरोध नहीं करती और पारिवारिक समस्याओं का दृढ़ता से सामना करती हुई अपनी संतानों का पालन-पोषण करती है। इस उपन्यास में नारी शोषण को विश्वव्यापी स्तरपर दर्शाया गया है। इस संदर्भ में गोपाल राय लिखते है "स्त्री चाहे भारत की हो या अमरिका की, उच्च वर्ग की, मध्यवर्ग की या निम्नवर्ग की हो, पुरूष द्वारा श्रम और देह शोषण उसकी नियति है।"[35] तत्पश्चात नौकरी करते हुए स्नातक की पदवी प्राप्त करती है। कालांतर में उसे ऑक्स फॉस यू एस. ए. दिल्ली शाखा में उच्च पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इसमें पुरूष के अधिकार को चुनौती देती नर्मदा दिखाई देती है। वह अपने पति द्वारा दी जा रही प्रताड़ना को सह नहीं पाती । वह तीव्र शब्दों में उसका निषेध करती है। ''टांगे तोड़कर सड़क पर फेंक दूँगी। तू मेरी रखैल था। कमा-कमाकर तुझे खिलाया मुसटंडे।"[36] स्मिता और मरियन ऐसे ही पात्र हैं। इसमें नारी पात्र स्त्री बनकर ही जीवन बिताने में विश्वास रखती है। सभी नारी पात्र अपनी अलग पहचान बनाने में समर्थ है।

गर्ग जी के **'वंशज'** उपन्यास में सविता जैसे चौकस, सतर्क एवं व्यवहारिक नारी का चित्रण किया है। **'मैं और मैं'** की माधवी महत्वाकांक्षी है। अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने हेतु वह कौशल का सहारा लेती है। लेकिन कौशल नारी का पशुतुल्य शोषण करने वाला पुरूष है। माधवी को जब अपने शोषण का आभास होता है, तब सतर्कता और कुशलता के साथ कौशल के सिक्के उसे लौटाकर उसके जाल से बाहर निकलती है।**'अनित्य'** यह गर्ग जी का उपन्यास अँग्रेजी शासन का वर्णन करने हेतु लिखा गया है लेकिन इसमें भी स्त्री पर हो रहे पारिवारिक अत्याचार का उल्लेख किया गया है।

6.1.10 सूर्यबाला :-

हिंदी साहित्य में नारी की वेदना और पीड़ा को व्यक्त करनेवाली तथा उसकी दबी हुई आवाज को वाणी देनेवाली सूर्यबाला सशक्त महिला लेखिका है।

इनके उपन्यास **'सुबह से इंतजार तक'** की नायिका मानू है। परिवार की आर्थिक स्थिति संतोषप्रद न होने के कारण हायस्कूल तक की पढ़ाई कर सकी। उसकी विवाह की चिंता के कारण उसे मामा के यहाँ भेज दिया जाता है। वहाँ उसका

विवाह तो नहीं होता अपितु मामा के यहाँ कार्यरत एक युवक द्वारा उस पर बलात्कार होता है। वह गर्भवती होती है। पारिवारिक कर्तव्य के प्रति जागरूक रहकर नौकरी और टयूशन कर वह भाई को डॉक्टर बनाती है। अंततः टी. बी. के कारण उसकी मृत्यु होती है।

इनका **'मेरे संधि पत्र'** नारी जीवन की छटपटाहट को व्यक्त करनेवाला उपन्यास है। स्त्री को जीवन में निरंतर संधि करनी की प्रक्रिया झेलनी पड़ती है। नायिका शिवा का विवाह विधुर से हुआ है, जिसे पहली पत्नी से तीन बेटियाँ है। शिवा और उसके पति का संबंध तनावग्रस्त होने के कारण शिवा को निरंतर समझौते करके जीवन व्यतीत करना पड़ता है। पति की मृत्यु के पश्चात इस घुटन भरी जिंदगी से मुक्त होने के लिए उसका मन छटपटाता है। अंत में वह अपने प्रेमी रत्नेश को समर्पित हो जाती है।

उनके **'अग्नि पंछी'** उपन्यास में एक ऐसी नारी की व्यथा अंकित की गई है, जो पूरे जीवन में सुख प्राप्त करने के प्रयास करती रहती है। पति की मृत्यु के पश्चात बेटे को पढ़ा-लिखाकर बड़ा करके वह उसकी शादी कर देती है। शहर में रहनेवाले अपने इस पुत्र के पास जाकर सुखी जीवन गुजारना उसका सपना है। जो कभी पूरा नहीं होता। जब वह शहर आती है, तो वहाँ के माहौल को स्वीकार नहीं कर पाती। बेटा तंग आकर उसे फिर गाँव वापस भेजता है। यहाँ से उसका गाँव और शहर का न रूकनेवाला सिलसिला आरंभ हो जाता है। गाँव के संबंधी तथा बेटा उसे बोझ समझकर ठुकराते है। वह अपना संतुलन खो बैठती है।

6.1.11 रजनी पन्नीकर :-

रजनी पन्नीकर ने नारी जीवन से संबंधित कई रचनाओं का निर्माण किया है। वे मूलतः मनोवैज्ञानिक कथाकार रही है। मध्यमवर्ग की नारी उनके कथानक को गतिशीलता प्रदान करती है।

इनके **'दो लड़कियाँ'**उपन्यास की रंजना पर परिवार का संपूर्ण दायित्व है। वह अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए संघर्षरत दिखाई देती है। वह सेठ कनोड़िया की प्राइवेट सेक्रेटरी के रूप में कार्यरत है। एक ओर वह परंपरागत विचारों

से प्रभावित है तो दूसरी ओर आर्थिक अभाव से उभरने हेतु समस्त वर्जनाओं को नकारती है। सारी सुख सुविधाओं के बदले उसे सेठ के द्वारा किए जा रहे यौन शोषण को सहना पड़ता है। इस प्रकार प्रेमी और पति, परंपरा और विद्रोह के अर्न्तव्दंद्व में उसकी अवस्था पेण्डुलम के समान हो गयी है। वह नौकरी करने के लिए विवश है। वह कहती है," मैं इसलिए काम करती हूँ कि घर की आवश्यकताएँ पूरी हो जाएं। परिवार के लोगों को दोनों समय का भोजन मिल सके।"[37] संपूर्ण उपन्यास में वह पुरूष की अधिनस्था से मुक्त होने का प्रयास करती हुई दिखाई देती है।

'महानगर की मीता' की नायिका 'मीता' विभिन्न कठिनाइयों को सहते हुए अपना मार्ग निश्चित कर आगे बढ़ती है। नारी क्षमता एवं आत्मविश्वास का उत्कृष्ट उदाहरण मीता के रूप में हमारे सामने आता है। **'काली लड़की'** उपन्यास की कावेरी और उसकी माँ दोनों ही पति को छोड़कर विदेश चली जाती है। निश्चित ही यह पाश्चात्य प्रभाव है। **'दूरियाँ'**इस उपन्यास की चारू यश को चाहती है। परंतु नागालैंड जाने के पश्चात वह विवाह कर लेता है, तब चारू विचलित होती है। उसे प्रेम एक छलावा लगता है। वह पुरूष जाति से प्रतिशोध लेने का निश्चय करती है। अब वह 'फ्लर्ट' होकर युवकों को अपने मोहपाश में बाँधती है। तत्पश्चात उन्हें अपमानित और तिरस्कृत करती जाती है। उसे अपने इस व्यवहार में सुख की प्राप्ति होती है। प्रेम में पीड़ित होकर वह अब परपीड़न का आनंद उठाती रहती है।

6.1.12 मंजुल भगत :-

मंजुल भगत समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य की प्रमुख लेखिका है। इनके उपन्यासों में प्रेम की महत्ता को समझाया गया है।

मंजुल भगत का **'अनारो'** निम्न मध्यम वर्ग की नारी की पीड़ा को व्यक्त करनेवाला उपन्यास है। इसकी नायिका अनारो आदर्श एवं स्वाभिमानी नारी है। वह अपने परिवार के प्रति अपने कर्तव्य का प्रामाणिकता से निर्वाह करती है। पति शराबी होने के बावजूद चौका-बर्तन करके वह अपने परिवार का पोषण करती है। वह एक संस्कारी भारतीय नारी है। जो पति के अन्याय-अत्याचार को सहन करती है। लेकिन उससे संबंध विच्छेद नहीं करती है। वह संस्कार एवं संघर्ष का मिलाजुला रूप है।

'तिरछी बौछार' उपन्यास की नैना पारंपारिक पद्धति की विवाह पद्धति का स्वीकार नहीं करती है । उसका विचार है , 'मैं रेस के घोड़े की तरह किसी की जाँच पड़ताल के लिए नहीं बैठूँगी, मैं बेजान गुड़िया की तरह सजकर नहीं बैठूँगी, और मैं एक बार में ही लड़के को हाँ नहीं कर सकती ।' इस प्रकार वह विवाह के निर्णय में जल्दबाजी नहीं चाहती। स्वयं के निर्णय को प्रमुखता देती है। इसी उपन्यास की नायिका विस्मिता विवाहित है। अपने पति सुधीर और पुत्री नैना के साथ उसका पारिवारिक जीवन सुस्थिति में है परंतु कालांतर में गृहस्थ जीवन की एकरसता के कारण वह सुधीर के मित्र निशीथ की ओर आकर्षित होती है। उसके लिए निशीथ वर्षा की तिरछी बौछार के समान है जो उसके मन को आनंदित करता है।

'लेडीज क्लब' में महानगरीय जीवन का बनावटीपन प्रस्तुत हुआ है। इसमें स्त्रियाँ केवल खाने-पीने, गपशप करने और एक-दूसरे पर ताने कसने के लिए क्लब में आती है। श्रीमती गंडेविया में वर्गश्रेष्ठता का अहंकार है। श्रीमती खंडेलवाल अपने आपको अत्यंत व्यस्त समाज सेविका मानती है। श्रीमती पूरी सभी क्लब की सदस्यों को सुरापान के लिए आमंत्रित करती है। श्रीमती कौल अपने पति से संबंध विच्छेद करना चाहती है, तो श्री गंडेविया अपनी पत्नी से तलाक लेकर दूसरा विवाह करना चाहते है । इस उपन्यास में महानगरीय परिवेश में नारी की आकांक्षाओं का यर्थाथांकन है। **'टूटा हुआ इंद्रधनुष्य'** में संबंधों का आधार कोरी भावुकता न होकर बौद्धिक क्षमता भी होती है, यह स्पष्ट किया गया है।

6.1.13 शशिप्रभा शास्त्री -

शशिप्रभा शास्त्री जी हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका मानी जाती है। इनके साहित्य में संपूर्ण परिवेश सहजता व सादगी से चित्रित है।

'वीरान रास्ते और झरना'उपन्यास में अनमेल विवाह की समस्या है। उसकी नायिका-अचला है। माता-पिता के चरित्रहीन होने के कारण वह विद्रोही बन जाती है । उसी के शब्दों में - "मैं बीसियों लड़कों के साथ घूमती हूँ, रेस्टोरंट में बैठती हूँ। रिकार्डो से उठते हुए भद्दे गानों को सुनकर भद्दी तरह से सर हिलाती हूँ। आँखें

मटकाती हूँ.. मैं आजकल किसी के दिल की मलिका बनी हुई हूँ और किसी एक की नहीं अनेकों की।"[38]

'नावें' की मालती विवाहित सोमजी के प्रति आकर्षित है। मालती का परिवार इस संदर्भ में कोई रोक-टोक नहीं लगाता क्योंकि उन्हें केवल उसके वेतन से मतलब है। मालती पिता के सेवा निवृत्त होने के कारण परिवार के निर्वाह के लिए नौकरी करती है और पुस्तकों का अनुवाद कर अतिरिक्त आय प्राप्त करती है। वह आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक शोषण का शिकार होती है।

'परछाईयों के पीछे' उपन्यास में परंपरागत एवं आधुनिक मूल्यों के बीच फँसी नारी की मानसिकता को व्यक्त किया गया है। सुमित्रा एक नौकरीपेशा नारी है। उसका पति उसकी कमाई पर जीवन यापन करता है। वह अपने पति महिपाल द्वारा अपमानित, प्रताड़ित होती है। वह भारतीय नारी के समान सबकुछ सहती है। सुमित्रा कहती है, "पुरूष शायद इसी में अपना बड़प्पन समझता है, अपने काले कारनामों, कुकृत्यों का बखान करने में भी उसे कोई हिचक या सकुचाहट नहीं होती। पुरूष के लिए जैसे सबकुछ माफ हो। स्वाभाविक हो और नारी के लिए लीक से एक सेंटीमीटर भी बाहर चले जाना दंडनीय, अशोभनीय, महापाप।"[39] वह तलाक लेने का निर्णय करती है परंतु बच्चों के स्वस्थ पालन-पोषण के लिए माता-पिता का साया जरूरी यह मानकर अपना निर्णय बदल देती है।

'क्योंकि' उपन्यास में भारतीय नारी के परंपरागत विशेषताओं को स्पष्ट किया गया है। नारी को अलंकारों के प्रति मोह होता है। उपन्यास की नायिका आभा अपनी सहेली श्यामा के अलंकारों को देखकर दु:खी होती है। **'सीढ़ियाँ'** की नायिका मनीषा डॉक्टर बनती है और अकेली रहकर अपना अस्तित्व सिद्ध करती है। इसमें मानसिक व्दंव्द में फँसी नायिका अपने से कम उम्र के नायक से प्रेम करते हुए भी विवाह नहीं कर पाती। **'कर्करेखा'**की तनु आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नौकरी करती है। उसे अकेला देखकर पुरूष उसके साथ गलत व्यवहार करते है। दहेज की राशि एकत्र हो जाने पर वह नौकरी से त्यागपत्र दे देती है। साथ ही लेखिका ने तनु और ध्रुव के शारीरिक संबंध का चित्रण किया है।

'कोडवर्ड' उपन्यास में नायिका मीना की विद्रोहात्मक स्थिति को परिलक्षित किया गया है। वह स्वीकार करती है, "सुनो किशोर बाबू, मैं एक खराब माँ-बाप की लड़की हूँ। मेरी माँ भी आवारा थी। मैं भी आवारा हूँ। मेरी माँ भी कायर थी मैं भी कायर हूँ। कभी एकाध पैग ले लेने में भी मुझे कोई ऐतराज नहीं होता । और भी बहुत कुछ करती हूँ। कर सकती हूँ।"[40] इसमें नीना एवं नवीना दीदी के लेस्बियन संबंधों की ओर संकेत किया है। दोनों ही युवतियाँ पारस्पारिक सान्निध्य में आनंद प्राप्त करती है।

'उम्र एक गलियारे की' उपन्यास की नायिका सुनंदा का विचार है कि जीवन साथी चुनने का उसका अपना अधिकार है। विवाह दोनों की संमति से ही होना चाहिए। जब उसे देवेश की ओर से विवाह का प्रस्ताव आता है तब वह उसे ठुकराकर नारी स्वतंत्रता का परिचय देती है। लेकिन पति नवल में यौन संबंधो के प्रति उत्साह हीनता से व्यथित होकर यौन-तृप्ति के लिए देवेश से आग्रह करती है। **'अमलताश'**की नायिका अन्याय का विरोध करना चाहती है पर परिस्थितियाँ उसका साथ नहीं देती। पति से संबंध विच्छेद कर वह परित्यक्ता के रूप में जीते हुए अपने अधिकारों के प्रति सावधान होती है।

6.1.14 निरूपमा सेवती :-

निरूपमा जी यथार्थवादी उपन्यासकार है। वे कार्यरत नारी की दुनिया का व्दंव्द तथा उसके संघर्ष को निर्भिकतापूर्वक दर्शाने में सिद्धहस्त है। जीवन की विसंगतियों और यथार्थबोध की तीखी संवेदनाओं से युक्त नारी उनकी कथाओं का केंद्र है।

निरूपमा जी ने **'पतझड की आवाजें'** उपन्यास में नौकरी में उच्च अधिकारी द्वारा हो रहे नारी के शोषण का वर्णन किया है। अनुभा चाहते हुए भी विवाह नहीं कर पाती क्योंकि घर की आर्थिक अवस्था दयनीय है। विवाह को महत्व देने वाली सुनीला है। दोनों के जीवन में कई पुरूष आते हैं। उषा उपयोगितावादी सोच रखती है। वह परिस्थिति के कारण अविवाहित रहती है।

'बँटता हुआ आदमी' में सुनंदा घर की आर्थिक स्थिति के कारण अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती। बंबई जाकर फिल्मों की चकाचौंध में अपनी इज्जत खो बैठती है। बाद में इज्जतदार माहौल में आने की छटपटाहट में धन कमाने में लग जाती है।

'मेरा नरक अपना है' में विवाहित शीला सामाजिक मर्यादाओं को तोड़कर अपने प्रेमी सुमीत के घर जाकर उससे मिलती है। इसमें शीला की बड़ी बेटी के माध्यम से अविवाहित मातृत्व की समस्या को भी लेखिका ने चित्रित किया है। **'दहकन के पार'**उपन्यास की नायिका तुषार भी अविवाहित मातृत्व की समस्या की शिकार है। इस प्रकार निरूपमा जी ने अपने उपन्यासों में नारी के शोषण को चित्रित किया है।

6.1.15 राजी सेठ :-

राजी सेठ नवें दशक की प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका है। उन्होंने साहित्य के माध्यम से आधुनिक विचारों को समाज में प्रस्थापित किया है।

नारी मन का सूक्ष्मता से चित्रण करनेवाली इस लेखिका ने अपने **'तत्सम'**उपन्यास में भारतीय विधवा नारी की मानसिकता को चित्रित किया है। पति की मृत्यु के पश्चात वसुधा बड़ी मुश्किल से पुर्नविवाह के लिए राजी होती है। लेकिन होने वाले जीवन साथी को सारी सच्चाई बताकर बिना हड़बड़ी किए स्वविवेक से निर्णय लेती है।

'निष्कवच'उपन्यास में 'नीरा' नामक पात्र के माध्यम से एक सचेत स्वतंत्र विचारोंवाली आत्म सजग लड़की का चित्रण किया गया है। वह अपने सौंदर्य को बनाए रखने के लिए अपनी बच्ची को दूध तक नहीं पिलाती। इसी उपन्यास की मार्था के विचार में स्त्री मुक्ति का एक सजग अर्थ पुरूषों से नफरत करना एवं उनका साधन के रूप में प्रयोग करना है। इसलिए वह पुरूषों से बदला लेने की मानसिकता से प्रभावित है। जब उसे यह ज्ञात होता है कि उसके गर्भ में पल रहा भ्रूण पुरूष है तो वह उसे नष्ट करने का निर्णय लेती है।

6.1.16 कांता भारती -

नारी की समस्याओं को उजागर करनेवाली कांता भारती एक सशक्त लेखिका है। अपने उपन्यासों के माध्यम से वह स्त्री समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। नारी के परंपरागत रूप का चित्रण उनके उपन्यासों में पाया जाता है।

'रेत की मछली' की कुंतल पत्नी धर्म को सर्वोपरि मानती है। उसका पति उसके सामने ही मीनल के साथ संबंध बनाए हुए है। पति उसे अपमानित करता है, परंतु वह सब कुछ सहती है। जब पति उसे घर से निकाल देता है तब भी वह 'मेरी यह भीरूता ही मेरा दुर्भाग्य है' कहकर शांत रहती है। उसके सामने रोजगार की समस्या खड़ी होती है। फिर भी धैर्य के साथ वह इन सभी समस्याओं का समाधान ढूँढकर जीवन जीती है।

6.1.17 कृष्णा सोबती :-

कृष्णा जी नारी समस्याओं को उजागर करनेवाली महत्वपूर्ण महिला उपन्यासकार है। कृष्णा जी ने अपने उपन्यासों के विकास क्रम में परंपरा से हटकर काम किया है। इन्होंने उपन्यासों में मुस्लिम सभ्यता का भी चित्रण किया है। लोक व्यवहार, जीवन तथा सांस्कृतिक धरातल पर नवीन मूल्यों का विकास किया है। उन्होंने नारी-जीवन के नए रूपों को प्रस्तुत कर नई अवधारणा को भावनात्मक स्तर पर पहुँचाया है। उनके उपन्यास 'स्व' का राग-अनुराग ही नहीं, शाश्वत मूल्यों का आग्रह और संघर्ष भी है।

इनके **'डार से बिछुडी'** इस उपन्यास में पाशो के शोषण को प्रस्तुत किया गया है। **'मित्रो मरजानी'** में परंपरागत बंधनों को अस्वीकार करने वाली मित्रो की कथा है। उसे एक सभ्य परिवार की बहू के समान दबे-ढके रहने का तौर तरीका पसंद नहीं है। वह एक ऐसी नारी है जो अपनी अतृप्त यौनेच्छाओं को सबके सामने प्रस्तुत तो करती है। पर अंत में फिर से अपने पति के पास लौट आती है।'**सुरजमुखी अंधेरे के**' में नारी मन की सूक्ष्म भावनाओं के साथ-साथ उसके देह की जरूरतों का भी मनोवैज्ञानिक चित्रण है। बचपन में बलात्कार का शिकार हो जाने के कारण रत्तिका

की काम विकृति विकसित हो जाती है। अंत में दिवाकर से उसे पूर्ण संतुष्टि मिलने पर वह उसके प्रति पूर्णतः समर्पित हो जाती है।

'दिलो-दानिश' उपन्यास में वकील कृपानारायण द्वारा महकबानों की विवशता का लाभ उठाकर उसके शोषण का चित्रण है। पिता के कत्ल के अपराध में माँ को जेल होती है। माँ महक की परवरिश के लिए अपने वकील कृपानारायण से निवेदन करती है। परंतु वह महक को अपनी रखैल बनाकर उसका शोषण करता है। **'समय सरगम'** उपन्यास में महानगर में रहनेवाले दो वृद्ध व्यक्तियों के अकेलेपन को उभारा गया है। इसमें लेखिका ने महानगर में टूटते परिवार की ओर संकेत किया है। महानगरीय जीवन में अकेलेपन की त्रासदी परिलक्षित होती है। अकेलेपन का अर्थ है भीड़ के साथ रहते हुए भी अकेलेपन का अनुभव करना। **'ऐ लड़की'** की वृद्धा अम्मू अकेलेपन से निजात पाने के लिए मृत्यु की प्रतीक्षा करती है।

'तीन पहाड' की 'जया' अन्तमुर्खी, आत्मपीड़न से ग्रसित और भावुक है। उसके जीवन को घर और बाहर की समस्या उजाड़ कर रख देती है। जया श्री दा पर मोहित हो जाती है। श्री दा विदेश जाने से पहले सगाई करके उसे कभी न भूलने का वादा करता है। किंतु लौटता है एडना के पुत्र का बाप बनकर। घर से पलायन कर जया तपन से प्यार करती है। दोनों के जीवन में श्री दा का प्रवेश जया की मृत्यु का कारण बनता है।

6.1.18 कुसुम अंचल -

कुसुम अंचल नारीवादी लेखिका है। उन्होंने मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को महत्व दिया हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों के पात्रों को कलात्मक रूप दिया है। साथ ही वैवाहिक संबंधों में रिक्तता, अजनबीपन, बौखलाहट आदि का यथार्थ चित्रण किया है। वे मूल्यों में परिवर्तन के साथ आदर्शवादिता की उपयोगिता लाने का भी प्रयास करती है।

'उसकी पंचवटी' नामक उपन्यास में नायिका पति के अतिरिक्त अन्य पुरूष से संबंध बनाती है। वह अपने प्रेम तथा उसके साथ बिताए हुए कोमल क्षणों को भी सबके सामने स्वीकृत करती है। **'अपनी अपनी यात्रा'** में नायिका मधुर स्वच्छंद एवं

विद्रोही नारी है। वह अपने जीवन में यौन तृप्ति के लिए कोई बंधन नहीं मानती। वह यौन संबंध को एक भावना मानती है जो पशु पक्षी में भी दृष्टिगत होती है। लेखिका का विचार है,"एक-दूसरे को न चाहकर भी एक छत के नीचे रहते थे क्योंकि बंधन है परिवार का समाज का और विवाह का। माँ-बाप जिससे उनका जी चाहता है अपनी लड़की या लड़के को बांध देते हैं कि लो यह तुम्हारा जीवन साथी बस पकड़े रहो सड़ते रहो, अगर विद्रोह करोगे तो सब कहेंगे चरित्रहीन है। बुरी है निभाना नहीं आता।"[41]

'उस तक' की मुक्ता सतपाल निगम की स्टेनो है। अपने सीमित वेतन में वह संतुष्ट नहीं है। परंतु सतपाल के साथ स्वच्छंद जीवन को स्वीकार करने के कारण उसे ऐश्वर्य की सभी वस्तुएँ जैसे ऊँचे पर्फ्यूम, विदेश यात्रा की सुविधा प्राप्त हो जाती है। इसके लिए उसे अपनी शामें और देह सतपाल के नाम करनी पड़ती है। बलात्कार की यंत्रणा भोगने के पश्चात मुक्ता मानसिक अशांति का अनुभव करती है। वह अपराध बोध से ग्रस्त होती है। उसका प्रेमी भी उसे त्याग देता है। समाज उसकी निंदा करता है। फलस्वरूप वह मानसिक रूग्ण बन जाती है।

6.1.19 दीप्ति खंडेलवाल -

नारी मन की तहों तक प्रविष्ट होती संवेदनशील दृष्टि को लेकर साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान पानेवाली दीप्ति खंडेलवाल जी का नाम अपरिचित नहीं है। इन्होंने पति-पत्नी संबंध को आतंरिक एवं बाह्य रूप में विश्लेषित किया है।

'प्रतिध्वनियाँ' इस उपन्यास में लेखिका ने भारतीय समाज पर पाश्चात्य जीवन का प्रभाव दिखाया है। वहाँ प्रेम और यौन संबंध की स्वतंत्रता है। इसमें नीलकांत के अपनी पत्नी अचला के अतिरिक्त शुभ्रा, जया और वेश्या मोतीबाई के साथ संबंध है। अचला का संबंध विनय से है। वह विनय के द्वारा गर्भवती होकर एक संतान को जन्म देती है। दूसरी बार गर्भवती होने पर वह अपने पति नीलकांत से कहती है - "तुम वासना के आवेश में जया को गर्भवती बना सकते हो.. मोतीबाई से इश्क फरमा सकते है और मैं जिससे प्रेम करती हूँ उसकी संतान को गर्भ में धारण नहीं कर सकती। केवल इसलिए कि तुम पुरूष हो और मैं नारी। क्षमा करना कांत मैं ऐसे

किसी बंधन को नहीं मानती। जो भीतर से नहीं, बाहर से बांधते है, तुमसे भी मैं बाहर से बंधी हुई हूँ, यह गर्भ विनय का है।"[42] पर पति की यातनाओं से तंग आकर अचला नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या कर लेती है।

'प्रिया' में तीन पीढ़ियों के माध्यम से स्त्री-पुरूषों के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। सौदामिनी तथा उसकी बड़ी बेटी चित्रा दोनों प्रेम और विवाह में धोखा खाकर अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश है। सौदामिनी की छोटी बेटी प्रिया भी एक विवाहित पुरूष के साथ संबंध स्थापित करके अविवाहित माता बनने जा रही है। इसमें लेखिका ने नारी के यौन शोषण को चित्रित किया है। रवि और राधा एक-दूसरे को चाहते है। गाँव में महामारी फैलने के कारण वे महानगर में आ जाते है। गुंडे उसको अपाहिज बनाकर राधा पर सामूहिक बलात्कार करते हैं।

'कोहरे' में प्रेम विवाह के बावजूद पति-पत्नी के संबंधों में आए तनावों को चित्रित किया गया है। सुनील अपनी प्रेमिका एवं पत्नी स्मिता के साथ विवाह के पश्चात अत्याचार पूर्ण दुर्व्यवहार करने लगता है। जब स्मिता की सहनशक्ति खत्म होती है तब वह प्रशांत से पुर्नविवाह करके सुखद जीवन व्यतीत करने लगती है।

6.1.20. शुभा वर्मा :-

नारी की स्वतंत्रता का अर्थ नारी देह की स्वतंत्र तुष्टि नहीं होता। नारी मुक्ति आंदोलन का लक्ष्य केवल देह के उन्मुक्त भोग के लिए अधिकारों की माँग नहीं। शुभा वर्मा की नारी मुक्त जीवन की कामना करती है। पुरूष को स्वामी बनाम पति के रूप में न स्वीकार कर केवल एक संगी एवं साथी का दर्जा देकर ही राहत पाती है।

'कोई एक' की नायिका रीना प्रेम और विवाह को लेकर अनिर्णय की स्थिति में पहुँच जाती है। रीना स्त्री-पुरूष संबंधों की पर्तो के भीतर छिपे हुए प्रेम और काम की तहों को पहचान उन्मुक्त संबंधों के औचित्य को स्थापित करती है। सुसंपन्न, स्वतंत्र रीना देव, अमित, सत्यजीत तीनों से अलग-अलग परिवेश में प्रेम संबंध रखती है। इस स्थिति में वह कुंठाग्रस्त होती है।

'एक औरत की जिंदगी' की रत्ती भी पूर्व प्रेम के कारण वैवाहिक जीवन में कुंठित होती है। स्त्री का जीवन, नियति के थपेड़ों को सहता हुआ अत्यंत जटिल होता

है। **'बीते हुए'**की नायिका तरूनिका बुद्धिजीवी माता-पिता द्वारा उपेक्षित एवं हीनता बोध की ग्रन्थि से ग्रस्त है। **'सुभान तेरी कुदरत'** की नर्मदा सफल पारिवारिक जीवन के बावजूद भी मानस के प्रणय में बंध जाती है। शुभा वर्मा वैयक्तिक धरातल पर नवीन संबंधों की तलाश में है।

'फ्रीलांसर' में लेखिका ने कामकाजी महिलाओं की विवशता और दैहिक शोषण की समस्या को चित्रित किया है। संपादक द्वारा युवतियों को नौकरी का आमिष दिखाकर उनका यौन शोषण किया जाता है। भारत में आर्थिक संकट से उबरने के लिए नारी वेश्यावृत्ति अपनाने हेतु विवश होती है। शुभा का मानना है, काम ही ऐसा दोस्त है जो दगा नहीं देता सिर्फ वक्त की पूंजी माँगता है और तमाम, जिंदगी परेशानियों से उबारे रहता है।

'मोहतरमा' उपन्यास नारी मुक्ति आंदोलन से प्रभावित है। इस उपन्यास की नायिका सहला बुद्धिजीवी लेखिका है। उसके लिए विवाह का कोई महत्व नहीं है। वह स्वच्छंदता से कई पुरूषों के साथ संबंध बनाये रखती है। वह विद्रोहात्मक प्रवृत्ति की है। उसकी दृष्टि में - "अगर शादी का अर्थ बच्चे पैदा करना, पति की नौकरानी बनकर रहना है तो उसे शादी नहीं करनी।"[43]

6.1.21 प्रतिभा वर्मा :-

'सुबह होती है, शाम होती है' की अनु जीजा की कुदृष्टि की शिकार है। अनु के पिता की मृत्यु के बाद घर सँभालने के बहाने वे घरजमाई बनकर संपत्ति का उपभोग लेते है। पत्नी को गाँव में छोड़कर सालियों के साथ सहानुभूति जताने का नाटक करते है। प्रतिभा जी ने पुरूषों के अनैतिकता और स्वार्थ वृत्ति पर प्रकाश ड़ाला है।

6.1.22 ऋता शुक्ला:-

'अग्निपर्व'का श्वसुर अपनी विधवा बहू के साथ जबरदस्ती यौन संबंध रखता है। उसके पुनर्विवाह की बात उठने पर वह बहू को जला देने का प्रयास करता है। ''न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी --- आज इसकी रूपसूरती को भस्म करके ----।"[44] इस उपन्यास में स्त्री के शोषण को चित्रित किया गया है।

6.1.23 कविता सिंह :-

इनके **'बदचलनी'**की रमला का पति दुश्चरित्र है। वह रमला के ऑफीस जाकर उसे डरा-धमकाकर उससे पैसा ऐंठता रहता है और न देने पर उस पर बदचलनी का आरोप लगाता है। उसकी आदतों से तंग आकर रमला अलग रहने का निर्णय लेती है। ''अब वह मक्कारी से रूपया बटोरना चाहती ताकि वह अपने लिए एक घर खरीद सके और अकेली रह सके।"[45]

6.1.24 प्रभा सक्सेना:-

'टुकड़ों में बँटा इंद्रधनुष' की नायिका चरित्रा सुशिक्षित है। आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी है। परंतु उसका पति शिरीष उसका आर्थिक शोषण करता है। लेखिका ने इस उपन्यास में पति द्वारा हो रही स्त्री अत्याचार पर प्रकाश ड़ाला है।

6.1.25 मन्नू भंडारी :-

समकालीन लेखिकाओं में मन्नू भंडारी का स्थान महत्वपूर्ण है। नारी जीवन की समस्याओं को लेकर उन्होंने गंभीर, परिवर्तनवादी रचनाओं का निर्माण किया है। उनके अधिकांश उपन्यासों में नारी जीवन की मर्मांतक पीड़ाओं को अभिव्यक्ति मिली है। नारी जीवन से संबंधित आज के राजनीतिक, सामाजिक और पारिवारिक वातावरण की दुविधापूर्ण स्थितियों का चित्रण उनके साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं। **'आपका बंटी'** आधुनिक सुशिक्षित पति-पत्नी के अहं का टकराव तथा तनावों से उत्पन्न स्थितियों के बीच सम्बन्ध-विच्छेद की भूमिका का प्रामाणिक दस्तावेज है। इसमें आधुनिकता तथा भारतीय संस्कारों के मध्य नारी जीवन के व्दंव्द को सफलतापूर्वक चित्रित किया गया है। शकुन अपने पति के साथ हुए मन-मुटाव के कारण अलग होकर अपना जीवन जीने के लिए प्रेरित होती है। इसका परिणाम उनके बेटे को भुगतना पड़ता है। शकुन के जीवन के बारे में डॉ.सानप शाम लिखते है कि, ''माता-पिता के त्रिकोणात्मक संबंधों की परस्पर टकराहट जितनी महत्वपूर्ण है उतनी ही शकुन के जीवन की लड़खड़ाहट मर्मस्पर्शी है।''[46] **'एक इंच मुस्कान'** पति राजेंद्र यादव के साथ लिखा उपन्यास है जो प्रचलित परंपराओं को नकारकर जीने वाली नायिका को चित्रित करता है।

6.1.26 शिवानी :-

समकालीन महिला उपन्यासकारों की विकास शृंखला में शिवानी का स्थान शीर्ष है। इनके अधिकांश उपन्यास नारी विषयक विभिन्न समस्याओं को व्यक्त करते है। **'सुरंगमा'**उपन्यास में गजानन अपनी पत्नी राजलक्ष्मी को धन-अर्जन का साधन समझता है। **'रथ्या'** उपन्यास की युवती अभावों को झेलती हुई अपमान सहती हुई उस मंजिल तक पहुँचती है जहाँ पैसों की उसके पास कोई कमी नहीं है। लेकिन उसका प्रेमी उसे केवल एक वेश्या के रूप में ही देखता है।

'गैंडा' उपन्यास की नायिका संपत्ति और वैभव प्राप्त करने की तीव्र आकांक्षा के कारण एक वैभव संपन्न कुरूप व्यक्ति से विवाह करती है। वह अपनी सखी के पति रोहित के मोहक व्यक्तित्व से मोहित होकर उसका सान्निध्य प्राप्त करने का प्रयास करती है। उसका स्वार्थी दृष्टिकोण इन शब्दों में व्यक्त हुआ है - "बदसूरत पति की पत्नी में जो सुख है --- कोई भी फरमाइश मुँह से निकलते ही पूरी हथेली में पति ऐसे उठाकर चलता है जैसे कांच की गुड़िया हूँ।"[14]

'कृष्णकली' की नायिका पति राज द्वारा प्रताड़ित होकर भी अपने पति को पाने की आकांक्षा रखती है। 'भैरवी' की नायिका विधवा राजेश्वरी की पुत्री भैरवी की जीवन कहानी इससे पृथक नहीं है। वह एक साल के लिए 'पति' विक्रम को पाती है। अपना सबकुछ समर्पित करके भी भैरवी जीवन के चौराहे पर खड़ी है। **'विषकन्या'**की कामिनी अपने ही जीजा के हवस की शिकार है। **'कैंचा'**की नन्दो जन्म योग वैधव्य के कारण कुंठाग्रस्त है। तो **'माणिक'** पारिवारिक विघटन की सशक्त अभिव्यक्ति है।

6.1.27 सुषमा बेदी :-

इनके **'लौटना'**उपन्यास की 'नीरा' स्वतंत्र विचारों की है। वह परंपरागत पत्नी बनकर नहीं रहना चाहती। वह ऐसा स्वतंत्र अस्तित्व चाहती है, जिसमें उसकी अपनी आकांक्षाएँ है।

6.1.28 निलिमा सिंह :-

'स्वीकार है मुझे' की नायिका विधु के अपने पति प्रशांत के साथ मधुर संबंध नहीं है। वह मनस्वी के साहचर्य में प्रसन्न है। इस बात को प्रशांत जानता है। वह एक

दिन मनस्वी को अपने यहाँ लेकर भी आता है। विधु अपने पति के आचरण से प्रक्षोभित है। अत: वह पति से स्पष्ट शब्दों में कहती है - "तुम अच्छी तरह जानते हो कि उस दिन मनस्वी का हाथ पकड़कर निकल जाती तो तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे, आज भी जाना चाहूँ तो रोक पाओगे?"[48]

6.1.29 मणिका मोहिनी :-

मणिका मोहिनी नारी जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। वह नारी को घुट-घुट कर अपने को मिटाने के बजाय खुली हवा में साँस लेने के लिए खिड़कियों के बंद पट खोलती है। इनके 'पारू ने कहा था' उपन्यास में स्त्री को प्रथम पुरूष को भूलकर अन्य पुरूषों को स्वीकार करना कितना कठिन होता है और इस प्रक्रिया से गुजरते हुए उसे जिस मानसिक संघर्ष से गुजरना पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण किया गया है।

6.1.30 कृष्णा अग्निहोत्री :-

इनके उपन्यास शोषित और पीड़ित औरत के जख्मों को चित्रित करते हैं। **'बात एक औरत की'** में नायिका 'कामना' पति के संदेह की शिकार है। कामना पति के इस व्यवहार से संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। वह अपनी पुत्री को लेकर पति के साथ संबंध विच्छेद करके अपना नया जीवन आरंभ करती है। शिविता पिता की मृत्यु के पश्चात भाई-बहनों के लिए वेश्या व्यवसाय स्वीकार करती दिखाई देती है।

'कुमारिकाएँ' में लेखिका ने कुँवारी रहनेवाली लड़कियों को चित्रित किया है। 'रोजा' बँक में नौकरी करती है, वहाँ के सहकर्मी उसे अश्शील पत्र भेजते हैं। अत: वह मानसिक स्तर पर टूट जाती है। **'वंदना'** पर उसकी मकान मालकिन संदेह करके उसे अपमानित करती है, इस वजह से वह मानसिक तनाव अनुभव करके अंत में विक्षिप्त हो जाती है। साथ ही 'शुचिता' का पति श्रीधर उसपर अत्याचार करता है। अंत में वह उसे तलाक देकर पुर्नविवाह करती है, परंतु सुखी नहीं हो पाती।

'टेसू की कहानियाँ' में सुधा और विनोद का विजातीय विवाह होता है। जिसे विनोद के माता-पिता स्वीकार नहीं कर पाते और सुधा पर अत्याचार करते है। जिस से वह विक्षिप्त हो जाती है। कृष्णा जी ने नारी को न तो देवी माना है न ही दानवी।

उनकी नजर में औरत सिर्फ औरत है, जो कि भावुकता की हद तक भावुक है और उत्तरदायित्व की सीमातक कर्तव्य परायण।

इस प्रकार महिला लेखिकाओं के आरंभिक लेखन को जब हम देखते हैं तब लगता है कि मूल्यगत संक्रमण की स्थिति में ये महिलाएँ मात्र अत्याधिक आदर्श और कल्पना के आधार पर ही अपना लेखन प्रस्तुत कर रही है। उनमें परिवार और नारी जीवन की रूमानी भावना अधिक है। उनका मूल स्वर प्रेम और वेदना है। उनमें युग की विस्तृत समस्याओं की कमी खलती है। प्रेमचंदोत्तर काल में लेखिकाओं ने अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं, घटनाओं एवं चिंताओं को मूर्तरूप देने की चेष्टा की है। चोरबाजारी, घूसखोरी, महँगाई, नेताओं तथा समाजसुधारकों का अनैतिक जीवन, भाई भतीजावाद आदि को महिला लेखिकाओं ने अपना निशाना बनाया। उच्च मूल्यों की हार, अनुशासनहीनता और अराजकता, नई पीढ़ी की दिशाहीनता आदि की ओर उनका ध्यान गया है। गाँव के जनमानस का महानगरों की ओर प्रयाण, वहाँ आवास, यातायात, सफाई आदि महानगरीय त्रासदी पर उन्होंने कलम चलायी है। प्रेम और यौन संबंधों की बदलती मान्यताएँ, संतान और माता-पिता के संबंधों में आयी दरारें तथा जीवन के बदलते मूल्यों की ओर लेखिकाओं ने अपना ध्यान केंद्रित किया है। भोगे हुए यथार्थ को स्वर देने में ये लेखिकाएँ पीछे नहीं है।

नारी आंदोलन ने उनकी सोच में क्रांति ला दी है। नारी अपने अधिकारों के प्रति विशेष सचेत हुई है। उसे एहसास हुआ कि वह पुरूष की भाँति हाड़ मांस की बनी है। सदियों से पुरूषसत्ता व्यवस्था ने उसके जीने के अधिकार छीनकर उसे गुलाम बनाया है। अर्थव्यवस्था को अपने हाथ में लेकर उस पर अंकुश लगाया और उसके जीवन में घुटन पैदा की है। पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका और पारिवारिक जीवन की अनेक समस्याओं की ओर इन लेखिकाओं ने लक्ष्य केंद्रित किया। सेक्स के कारण उत्पन्न अनेक समस्याओं पर नारी लेखिकाओं ने अपने विचार प्रस्तुत कर नारी पर होने वाले अत्याचारों के विरोध में अपनी आवाज उठायी है।

उन्होंने पारिवारिक विघटन अजनबीपन, अकेलापन, संत्रास, कुंठा आदि पर विचार व्यक्त किये हैं। नयी पीढ़ी की आशा आकांक्षाओं पर उन्होंने खुलकर विचार

प्रस्तुत किये है। दफ्तरी जीवन की नीरसता, भ्रष्टाचार, शारिरिक एवं मानसिक शोषण, सेक्स की विकृतियाँ आदि का भी पर्दाफाश किया है। नारी युग के आंदोलन, परिवर्तित संविधान, धर्मशास्त्रों के प्रति अनास्था, कामतुष्टिपरक जैविक मूल्य निर्वाह ने महिला लेखिकाओं के लेखन को प्रेरणा दी है। काम और संयम तथा वर्जनाओं का यथार्थ वर्णन लेखिकाओं ने किया है। नारी होने के नाते नारी की समस्त समस्याओं की ओर उनका ध्यान गया है। इन्होंने स्त्री संवेदना, घुटन और निराशा को व्यक्त करने का प्रयास किया है। तथापि कितनी ही बातें उनके लेखन में आने से रह गयी है। कहीं न कहीं आकर समाज के भय से वह उसे प्रकट नहीं कर पायी। सेक्स और बेडरूम की बातें कुछ साहसी लेखिकाओं के अतिरिक्त अधिकांश कह नहीं पायी फिर भले ही वह लेखिका कितनी ही आधुनिक क्यों न हो। नारी पर हो रहे अत्याचार के विरोध में उन्होंने जो लिखा शायद ही कोई पुरूष लेखक लिख पाया हो। जितनी तेजी से और जितनी अधिक संख्या में वह लिख रही है वह हमारे साहित्य के लिए गौरव की बात है।

6.1.31 प्रभा खेतान :-

समकालीन महिला लेखन में प्रभा खेतान एक ऐसा नाम है जिसने हिंदी साहित्य में अपनी खास पहचान निर्माण की है। अपने उपन्यास साहित्य में उन्होंने नारी की ज्वलंत समस्याओं का अत्यंत मार्मिकता के साथ चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में नारी विमर्श, अस्तित्व बोध, पारिवारिक संबंध, जीवन मूल्य, जीवन दर्शन आदि विविध आयाम परिलक्षित होते हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी उनके पात्र आगे बढ़ते नजर आते हैं। निराशा, हताशा, कुंठा, संत्रास आदि के बावजूद भी वे कभी आत्महत्या जैसे मार्ग नहीं अपनाते। वे निरंतर संघर्ष करते हुए परिस्थिति पर विजय प्राप्त करते है। उनके उपन्यासों में हमें विविधता दृष्टिगोचर होती है। प्रभा जी ने नारी की आंतरिक पीड़ा को वाणी प्रदान की है। प्रभा जी ने विविध विषयों पर अपना चिंतन व्यक्त कर अपनी लेखकीय क्षमता का परिचय दिया है।

डॉ. राजकुमारी शर्मा कहती है, ''प्रभा खेतान ने समकालीन नारी सोच को नवीन रूप में चित्रित किया है। समयानुसार अपने संबंधों, संभावनाओं और नारी के स्वतंत्र रूप को दिखाने का प्रयास किया है।''[49]

6.2. समकालीन उपन्यासों में प्रभा खेतान का योगदान-

हिंदी साहित्य की गणमान्य लेखिकाओं के बीच प्रभा खेतान की अपनी खास पहचान है। सीधे-सच्चे कथानक को शिल्प की पच्चीकारी से बोझिल किए बिना लिपिबद्ध करना उनकी विशेषता है। उनके कथ्य और शिल्प की, सादगी मोहक और मन को छूने वाली है। उनकी अधिकांश कहानियाँ और उपन्यास पारिवारिक रिश्तों के उत्थान-पतन पर आधारित है। उनका कोई कथ्य ऐसा नहीं जो हमें अविश्वसनीय लगे। लगता है सब हमारे आसपास घट रहा है। मानवीय संबंधों की अधिकांश बातें आत्मकथात्मक शैली में सुनाकर प्रभा जी पाठकों के बहुत करीब पहुँचती है। हर जगह उन्होंने अपनी अनुभूतियों को कागज पर उभारा है। एक ओर वे परंपरा का निर्वाह करती है तो दूसरी ओर आधुनिकता का। सामाजिक कुरीतियों और परंपराओं पर उन्होंने भरपूर कुठराघात किया है। पुत्री की अपेक्षा पुत्र को अधिक मान दिए जाने का विरोध उन्होंने अपने उपन्यासों में किया। नारी के अनेक रूपों को उन्होंने चित्रित किया हैं। विशिष्ट व्यवसायिक शैली के कारण उनके उपन्यास हर क्षेत्रों में पढ़े जाते हैं। मृदुला गर्ग एवं मैत्रेयी पुष्पा की तरह विद्रोहात्मक स्वर भी उनमें पाया जाता है। सदियों से पुरूष की आश्रिता नारी आज अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्षशील है। वह पुरूष को भाग्यदेवता मानने को तैयार नहीं। नासिरा शर्मा के समान उनकी नारियों में वैयक्तिक चेतना दिखाई देती है। रजनी पन्निकर के समान प्रभा जी की कामकाजी नारियाँ प्रेमजाल में नहीं फँसती और न प्रेम की ऊँची उड़ानों और कल्पना के परों पर बैठकर जीवन का निदान ढूँढती है। उषा प्रियवंदा के समान प्रभा खेतान जी ने एकाकीपन की त्रासदी को उभारा है। विदेशी वातावरण को चित्रित करते हुए नारी को उन्होंने एक नयी अर्थवत्ता प्रदान की है। नारी मन की घुटन, तड़प और अर्न्तद्वंद्व का सूक्ष्म चित्रण वह मालती जी एवं उषा जी की तरह ही करती है।

कृष्णा सोबती के समान वह जीविका, समय और समाज की चिंता किए बगैर अपने पात्रों की रचना करती है। शशिप्रभा शास्त्री और सूर्यबाला की तरह वह अपने और एक विवाहित डॉक्टर के बीच के संबंध को सबके सामने स्वीकार करती है। उन्होंने प्रिया और सोमा जैसी तथा रमा जैसी स्वच्छंद एवं स्वतंत्र विचारोंवाले पात्रों के साथ-साथ कस्तुरी, मिसेज गोयनका, एलिजा जैसी परंपरागत नारियों का भी चित्रण किया है। उनके लेखन में संभोग के दृश्य है लेकिन मर्यादा में। अभिव्यक्ति की वक्रता ने उन्हें बोल्ड लेखिका बना दिया। दीप्ति जी एवं ममता कालिया के समान बोल्डनेस प्रभा जी में दिखाई देता है। उन्होंने प्रेम, विवाह दांपत्य जीवन आदि को मालती जी के समान गहराई के साथ व्यक्त किया है। नैतिक संबंधों के बदलाव और उनमें पड़ने वाली दरारों को उन्होंने विशिष्ट दृष्टि प्रदान की है। महिला होने के बावजूद स्त्री-पुरूष संबंधों के चित्रण में मन्नू जी ने जिस प्रामाणिकता एवं तटस्थता का परिचय दिया है, उस प्रकार का प्रयास प्रभा खेतान की ओर से भी हुआ है। अश्लिल कहे जाने वाले अनुभव को जिस समर्थ भाषा में ममता कालिया प्रस्तुत करती है, वैसे प्रभा जी ने भी किया है। प्रभा खेतान मणिका मोहिनी के समान स्त्री-पुरूष के संबंधों को खुलेआम प्रस्तुत करती है।

मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नायिका अपने पति के होते हुए भी दूसरे शादी शुदा पुरूष से प्यार करती है। इतना ही नहीं वह चार-चार पतियों से शादी करती है। पुरूष की अयोग्यता, पर पुरूष और पर पत्नी के संबंध आदि सेक्स के अनेक रूप परवेज ने उभारे है। प्रभा खेतान के अपने-अपने चेहरे, पीली आंधी, एड्स, आओ पेपे, घर चलें इन उपन्यासों में भी ये बातें हैं। लेकिन मर्यादा में। परवेज ने प्रेम के बदलते हुए स्वरूप को उजागर तो किया है लेकिन कई बार वह कथानक का अंत फिल्मी अंदाज में करती है। प्रभा खेतान ने ऐसा नहीं किया। उनके हर उपन्यास का अंत वास्तविक जिंदगी पर समाप्त होता है। उनका विचार है कि नारी न तो सती है, न वेश्या है, वह केवल नारी है। अत: उन्होंने नारी की कामवासनाओं का विस्तार से अंकन किया है। यहाँ तक कि कामभावनाओं की तृप्ति के लिए पत्नी पति के पास होने पर भी दूसरे से शारीरिक संबंध जोड़ती है और उसे किसी प्रकार की

झिझक नहीं होती। प्रभा जी स्वयं बोल्ड है और उनका लेखन भी बोल्ड है। शशिप्रभा शास्त्री जी की नायिकाएँ कमजोर है। प्रभा खेतान जी की नायिकाएँ संघर्षरत है। उनके उपन्यासों में शिवानी जी के समान आकस्मिक संयोगों का जिक्र नहीं है। इसलिए उनकी कथा असंदिग्ध बनी हुई है। प्रभा खेतान के उपन्यासों में यथार्थता कूट-कूट कर भरी हुई है। उनके उपन्यासों में किस्सागोई इतनी अधिक है कि पाठक उससे बँध जाता है। प्रभा खेतान जी के उपन्यासों की विशेषता है कि वह व्यवसायिक क्षेत्र से जुड़े हुए है। उनके उपन्यासों के नारी पात्र आर्थिक रूप से स्वावलंबी होकर समाज एवं परिवार से संघर्ष करते दिखाई देते हैं।

स्त्री विमर्श की चर्चा आज जोर-शोर से हो रही है। स्त्री कलमकारों ने जब से कलम थामी है, साहित्य की दशा एवं दिशा ही बदल गयी है। स्त्री ने अपने भोगे हुए यथार्थ को साहित्य में उतारा है। नारी मुक्ति आंदोलन, नारी शिक्षा, पाश्चात्य विचारधारा एवं प्रभाव इन परिस्थितियों के कारण नारी लेखन में बदलाव आने लगा। लेखिकाएँ नारी जीवन में सुधार लाने का प्रयास करने लगी । महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में नारी की मन:स्थिति को स्वाभाविकता से व्यक्त किया। कुछ लेखिकाएँ अपने लेखन के कारण काफी चर्चित भी रही। इनमें प्रभा खेतान अपनी अलग पहचान रखती है।

प्रभा खेतान का लेखन काल्पनिक नहीं, वह जमीन से जुड़ा हुआ है। प्रभा ने न तो कही शीतल कक्ष में बैठकर लिखा और न ही घर के किसी शांत कोने में सुकून से बैठकर। उनका लेखन कार्य तो काम के बीच शुरू रहा। काम की उड़ानों के साथ लेखनी भी चलती रही और ऐसा लेखन पाठक को गहनता से जोड़ता रहा, क्योंकि उसमें बनावट नहीं । पसीने की गंध जरूर आती है। वह पाठक को प्रोत्साहित करते हुए सोचने को मजबूर करती है। इसी कारण प्रभा का लेखन हिंदी साहित्य में अपनी विशेष जगह बना पाया है। उनके साहित्य के केंद्र में स्त्री रही है और वह भी रात-दिन श्रम और समाज के दो पाटों के बीच पिसती हुई। उनके लेखन में दैहिकता अपना स्थान नहीं बना पाई उसमें कोरी भावुकता भी नहीं है। प्रभा के लेखन का

विषय इतना नपा-तुला है कि पाठक को न तो उसमें कुछ जोड़ने की और न ही कुछ घटाने की जरूरत महसूस होती है।

स्त्री के दमघोटू जीवन की चीख हिंदी साहित्य में अन्यत्र भी सुनाई देती है, मगर प्रभा के साहित्य में पाठक को जितनी पीड़ा और सच्चाई का आभास होता है वह अन्यत्र नहीं हो पाता। चाहे प्रिया हो या आइलिन या आइवी। व्यवस्था की मार झेलती हुई यह स्त्री त्रस्त जीवन से बाहर आने के लिए संघर्षरत है। अन्य देशों की स्त्री दशा पर कलम चलाना भी प्रभा खेतान की विशेषता है। यह उनकी अलग पहचान है। भारत की साधारण स्त्री अमरिका की स्त्री के संबंध में सोचती है कि वह पुरूष के बराबर अधिकारों का भोग करती है। प्रभा के लेखन से पश्चिमी स्त्री का शोषण भारतीय स्त्री के सामने आता है। कैथी जैसी दबंग स्त्री पितृसत्ता की मार से नहीं बच पाती। एक साधारण स्त्री यह सोचकर टूट जाती है कि शोषण की शिकार सिर्फ वही है। लेकिन प्रभा का साहित्य साबित करता है कि स्त्री चाहे वह किसी भी धर्म की हो, गरीब हो या अमीर, भारत की हो या अन्य किसी देश की, पितृसत्ता के मक्कड़जाल से बच नहीं पाती।

प्रभा खेतान स्त्री को उसकी कमजोरियों से ही अवगत नहीं कराती, बल्कि उसे आत्मबल से भी अवगत कराती है। थोपी हुई व्यवस्था में जीना उसकी लाचारी नहीं है, स्त्री चाहे तो गुलामी से मुक्त हो सकती है। बस जरूरत स्वयं को पहचानने की है। स्त्री आत्मबल और आत्मसम्मान को पहचाने तभी वह सम्मान के साथ जी पाएगी। प्रभा ने जो भोगा, जो देखा उससे वह टूटी नहीं बल्कि अधिक आत्मविश्वास के साथ अपनी विशेष पहचान बना ली।

इस प्रकार प्रभा खेतान का साहित्य स्त्री को खुला आँगन और उन्मुक्त गगन की ऊँचाई देता है। लेखिका ने अपने अधुनातम दृष्टिकोण का परिचय देते हुए समकालीन साहित्य के विकास में विशेष योगदान दिया है।

6.2.1 स्त्री जीवन की समस्याएँ :-

प्रभा जी के उपन्यासों में स्त्री जीवन की अनेक समस्याएँ उभरकर सामने आयी है।

6.2.1.1. बेटी के जन्म पर निराशा-

भारतीय और विशेषतः मारवाड़ी समाज में बेटी हमेशा बोझ समझी गयी है। इस बोझ को ढोने को मजबूर समाज ने बेटी के साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया। जिससे बचपन से ही वह प्रताड़ित होती रही। बेटा-बेटी में अंतर किया गया। बेटे के जन्म पर चांदी के थाल बजाता हुआ उच्चवर्गीय समाज बेटी के जन्म पर अश्रु बहाता है। 'छिन्नमस्ता' में प्रिया के जन्म पर उसके घरवाले निराश हो जाते है। प्रिया की दादी कहती है, "आ पड़ी ऊपर से.. भाया साँवर, अभी तो दो का ब्याह बाकी है.. या तीसरी और तैयार होगी। तेरे तो खर्चों ही खर्चों है। " [50]

बेटी के जन्म पर रोने की परंपरा सिर्फ भारत में ही नहीं, चीन जैसे देश में भी यही होता है। एक माँ की असह्य पीड़ा को व्यक्त करते हुए आइवी कहती है, "मेरी पहली संतान लड़की थी, सरकार की ओर से हम दो ही बच्चे पैदा कर सकते थे, अतः किसान के घर लड़की होना अभिशाप था। पति ने बच्ची को देखा तक नहीं। सास ने खाने में पता नहीं कौन-सी दवा मिलाकर दी कि दूध से भरी मेरी छातियाँ सूख गयी। बच्ची को दूध सास ही पिलाती थी पर वे उसे दूध नहीं पिलाती थी, घोला हुआ सफेद पानी जैसा स्टार्च पिलाती रही। बच्ची का पेट फूलता गया और दस दिन में वह मर गयी।"[51] आइवी की सास का विचार था, 'किसान के घर भला बेटी की क्या जरूरत'।

6.2.1.2 दहेज समस्या :-

दहेज आज के समाज की सबसे बड़ी समस्या है, जिसे प्रभा खेतान ने सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है। पारिवारिक समस्या में दहेज की वजह से नारी की दयनीय स्थिति हुई है। दहेज के कारण परिवार पर आर्थिक बोझ पड़ता है। 'अपने-अपने चेहरे' की रीतू के विवाह पर बहुत सारा दहेज देने के बाद भी उसका पति कुणाल दूसरी औरत के प्रेम में फँसकर अपनी पत्नी का त्याग करता है। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में सरोज की शादी में एक लाख रूपया दिया जाता है और खूबसूरत सरोज की शादी केवल अमीर होने के कारण काले बदसूरत लड़के से तय होती है। 'पीली आंधी' की पद्मावती के पिता दहेज जुटा न पाने के कारण अपनी बेटी का विवाह माधो जैसे

विधुर से करते है जो अनमेल विवाह है। 'सोमा' के पिता भी अपनी बेटी के विवाह में बहुत सारा दहेज देकर संबंधियों को खुश करने का प्रयास करते हैं। लड़की के जन्म के साथ ही उसके दहेज की तैयारी शुरू हो जाती है और चौदह वर्ष की होते ही उसके विवाह की चिंता सताने लगती है। संगीता और चंद्रा के दहेज की तैयारी में घर की सभी औरतें सिलाई-कढ़ाई में लगी रहती है। एक से बढ़कर एक कीमती सामान उनके लिए बटोरा जाता हैं। स्त्री के भविष्य या पढ़ाई की चिंता किसी को नहीं, वहाँ तो उनको एक खूंटे से बांधने भर की चिंता है।

6.2.1.3 पारिवारिक विघटन :-

पारिवारिक संबंधों के विघटन के मूल में पाश्चात्य प्रभाव, औद्योगिकरण, पति का दुर्व्यवहार, व्यस्तता, आर्थिक विषमता आदि प्रमुख कारण है। साथ ही पति और पत्नी के मध्य तीसरे की उपस्थिति भी परिवार विघटन के लिए जिम्मेदार है। 'आओ पेपे, घर चलें' के डॉ. डी. क्लारा ब्राऊन के प्यार में फँस जाता है और अपनी पत्नी एलिजा को पागल करार देकर उससे तलाक लेता है। 'मरील' किसी एक के साथ ज्यादा समय नहीं बिता पाती। वह पैसा और अपना अस्तित्व स्थापित करने के लिए परिवार को भी अनदेखा करती है। 'हेल्गा' नस्लवाद की शिकार होने के कारण अपने पति और बच्चों से भी प्यार नहीं करती। डॉ. बेरी अपनी पहली पत्नी से तलाक लेकर कैथी से दूसरा विवाह करते है। 'एड्स' उपन्यास में 'सोफिया' अपने पति को धोखा देती है। पति के मित्र से संबंध स्थापित करने के कारण उसे एड्स होता है। उसका पति 'एण्डू' अपनी पत्नी का त्याग करता है। 'अग्निसंभवा' में आइवी का पति शराब के नशे में उसे मारता-पीटता है। साथ ही वह उसके बच्ची को भी मार डालता है। इसलिए क्रोधित होकर आइवी उसका त्याग करती है। वह चीन से हाँगकाँग भाग जाती है। 'छिन्नमस्ता' में प्रिया का पति नरेंद्र अपनी पत्नी और उसके अस्तित्व को नकार कर उसके साथ बुरा व्यवहार करता है। प्रिया उसकी हरकतों से तंग आकर उससे विभक्त हो जाती है। प्रभा खेतान ने कोलकाता के कुछ करोड़पति घरों को करीब से देखा। वहाँ सबकुछ ऐसे ही घटित हो रहा था। पुरूष के इस खेल में कुछ घर तो टूट जाते हैं और कुछ आंतरिक कलह से जूझते रहते हैं। कही पति-पत्नी के

बीच दूसरी एक औरत आती है तो कही रोज नई औरत। इस तनातनी में बच्चे घुटन भरा जीवन जीने के लिए मजबूर होते हैं तो कहीं परिवार विभक्त हो जाते हैं। 'अपने-अपने चेहरे' में रमा नामक दूसरी औरत के कारण मि. गोयनका अपनी पत्नी को प्यार नहीं दे पाते। मि. गोयनका का दामाद भी अपनी पत्नी रीतू का त्याग कर अन्य स्त्री से संबंध स्थापित करता है। 'पीली आंधी' में 'सोमा' का पति गौतम नंपुसक होने के कारण वह अपनी पत्नी को यौन सुख नहीं दे पाता जिस वजह से सोमा उसका त्याग करती है। सोमा अपने अध्यापक सुजीत को चाहने लगती है। उनके प्यार में अपना सर्वस्व समर्पण करती है। यहाँ सोमा ने प्यार के लिए पारिवारिक संस्था को तिलांजलि दी है। चित्रा सुजीत की पत्नी घर छोड़कर चली जाती है। 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास का सुमित अपनी पत्नी वृंदा को छोड़कर सुनीता को चाहने लगता है। वह वृंदा से तलाक लेता है। इस प्रकार प्रभा खेतान ने पारिवारिक विघटन के अनेक कारणों को प्रस्तुत किया है।

6.2.1.4 नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण :-

पुरूष प्रधान इस समाज ने नारी को धीरे-धीरे अस्तित्वहीन बना दिया। समाज में उसे उसकी योग्यता के आधार पर ऊँचा स्थान नहीं दिया जाता। आज भी उसे भोग्या समझा जाता है। इतना विकास करने के बावजूद भी समाज में उसे दुय्यम स्थान दिया जाता है। 'आओ पेपे, घर चलें' की 'एलिजा' कैथी, प्रभा, 'तालाबंदी' की सुमित्रा' 'अग्निसंभवा' की 'आइवी' 'एड्स' की 'कुक्कू' 'पेट्रा', 'प्रभा', 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, 'अपने-अपने चेहरे' की मिसेज गोयनका, रीतू, रमा, 'पीली आंधी' की सोमा, पद्मावती , 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा इन सब पात्रों द्वारा समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। समाज अब भी नारी को कठपुतली के समान अपने इशारे पर नचाना चाहता है। नारी जीवन की इस सच्चाई को प्रभा खेतान ने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

सदियों से पुरूष स्त्री का उपभोग करता आया है, चाहे वह उसकी अपनी पत्नी हो या दूसरी स्त्री। 'अपने-अपने चेहरे' इस उपन्यास में पुरूष एकरसता से उबकर दूसरी औरत की ओर आकृष्ट है। यह परंपरा चल पड़ती है- "दूसरी औरत

की परंपरा.. वह भी तो हजारों सालों की है.. जैसे ही पुरूष ने विवाह किया होगा वही पहली रात के बाद हर रात उसे एक-सी लगी हो।"[52] धन-संपन्न समाज में स्त्री को एक वस्तु मानकर उसका उपयोग किया जाता है। पुरूषों को घर में एक देवी जैसी पत्नी चाहिए जो हर समय हाथ बांधे हुक्म सुनने को तैयार खड़ी रहे। समाज में उनकी इज्जत बढ़ा सके, बच्चों को संस्कारित कर सके और किसी गलत काम का भी विरोध न करे। इन रईसों को घर में पत्नी के अलावा अपने जीवन को रंगीन बनाने के लिए अन्य स्त्री भी चाहिए। समाज में धन के बल पर ऐसा ही चल रहा है।

प्रभा खेतान ने 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास नारी के समाज में हो रहे शोषण को स्पष्ट किया है। वृंदा सुबह से शाम तक पति और बच्चों के लिए खटती रहती है। जहाँ सुमित आठ या दस घंटे की डयुटी करके आता है, वहीं वृंदा अठारह घंटे के परिश्रम के बाद भी सुमित को संतुष्ट कर नही पाती। सुमित के काम का मूल्य आँका जाता है, मगर वृंदा के काम का कोई मूल्य नहीं। इसके विपरीत उसे मानसिक प्रताड़ना ही झेलनी पड़ती हैं।

6.2.1.5 नारी की आर्थिक परतंत्रता :-

भारत में नारी की दुर्दशा का कारण उसके संस्कार हैं जिसके नाम पर नारियों का शोषण होता आया है। यहाँ की नारी बचपन से बुढ़ापे तक पुरूष पर आश्रित रहती है। वह बचपन में पिता के आश्रित रहती है। युवावस्था में पति के आश्रय में तथा वृद्धावस्था में वह पुत्र का आश्रय लेती है। इस प्रकार उसे पूरा जीवन आर्थिक दृष्टि से परतंत्र रहना पड़ता है। इस आर्थिक परतंत्रता के कारण उसका शोषण होता है। पुरूष ने सदैव नारी का दमन किया है, उसे गुलाम बनाया है। 'छिन्नमस्ता' का नरेंद्र प्रिया को अपनी गुलाम मानता है। वह कहता है 'दरअसल तुम्हें इतनी खुली छुट देने की गलती मेरी ही थी। मुझे पहले ही चिड़िया के पंख काट डालने चाहिए थे।'[53] 'आओ पेपे, घर चलें' का डॉ. बेरी अपनी पत्नी कैथी को अपने पैरों पर खड़े होने का विरोध करता है। 'अपने-अपने चेहरे' की मिसेज गोयनका के पति उसे ज्यादा खर्च करने पर बातें सुनाता है। 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा आदि ऐसे अनेक उदाहरण है जो अपनी आर्थिक परतंत्रता की वजह से पति की ज्यादतियाँ बर्दाश्त करती है। इसके अनेक

कारण है। स्त्री का अज्ञान, रूढ़िवादिता, साहस और आत्मविश्वास की कमी, पुरूषों पर अवलंबित रहने का परंपरागत स्वभाव ये कमजोरियाँ इन्हें आगे बढ़ने से रोकती है। इन कारणों को लेखिका ने अपने पाठकों के सामने यथार्थ रूप में रखा है।

6.2.1.6 सेक्स, प्रेम एवं विवाह की समस्या :-

सेक्स, प्रेम एवं विवाह यों तो भिन्न है, पर इन तीनों का संबंध पर्याप्त स्पष्ट है। प्रभा जी के उपन्यासों में यह समस्या दृष्टिगोचर होती है। उनके 'आओ पेपे, घर चलें' की आइलिन के दो पति और पाँच प्रेमी है। मरील एक पति के साथ गुजारा नहीं कर पाती। उसका पति भी उसका त्याग कर दूसरी लड़की के साथ भाग जाता है। एलिजा और कैथी की स्थिति भी ऐसी है। 'तालाबंदी' की सुमित्रा की सेक्स की इच्छा उसका पति श्याम बाबू पूरी नहीं कर पाता, "सुमित्रा धीरे से आकर पति के बगल में लेट गई। गले में बाहों को लपटते हुए पूछा, "क्या सोच रहे है? कभी तो रिलेक्स किया कीजिये।" पत्नी के मांसल शरीर के दबाव का अर्थ श्याम बाबू समझ रहे थे। करवट बदलते हुए उन्होंने सुमित्रा को पास खींचा। सुमित्रा ने कहा "हम लोगों को प्यार किये हुए कितने दिन हो गये पता है?"[54]

'छिन्नमस्ता' में प्रिया के साथ बचपन में बुरी घटना घटती है, प्रिया बताती है, "मैं बारह साल की थी। ठसाठस भीड़। कन्धों से कन्धों की टकराहट। मुझसे चला नहीं जा रहा था। मैं पैर घसीट रही थी। ---- मेरे साथ मेरे पीछे-पीछे पैंट के बटन खोले वह आदमी। पुरूष का रूग्ण प्रदर्शन --- मैं किसी से प्रेम नहीं करूँगी। कभी शादी नहीं। सेक्स से घृणा है मुझे, बेहद घृणा।"[55] बचपन की इस दुर्घटना ने प्रिया के मन में सेक्स के प्रति घृणा निर्माण की।

'एड्स' उपन्यास में 'सोफिया' भी अपने पति को धोखा देकर पति के दोस्त के साथ लैंगिक संबंध प्रस्थापित करती है। 'अपने-अपने चेहरे' की 'मिसेज गोयनका' विवाह होने के बाद भी पति का प्रेम प्राप्त नहीं कर पाती। 'रमा' मिस्टर गोयनका का प्रेम तो पाती है पर विवाह नहीं कर पाती। वह सोचती है कि प्रेम करनेवाला अधिकार की लड़ाई नहीं लड़ सकता और जो अधिकार के लिए लड़ता है वह प्रेम करना नहीं जानता। रमा का मन प्रेम को शाश्वत नहीं मानता, उसे तो मानवीय

करूणा ही शाश्वत लगती है। मानवीय करूणा ही एक-दूसरे की जरूरतों को समझने की क्षमता रखती है। वह सोचती है-"लेकिन मैं क्या हूँ ? राजेंद्र के संदर्भ में.. ? अपने पैरों पर खड़ी स्वावलंबी स्त्री..? प्रेमिका की भूमिका कुछ समय के लिए होती है। आजीवन कोई उसी भूमिका में नहीं रह सकता। प्रेम तो पैदा होता है दोपहर की धूप की तरह, तपता है और फिर शाम की छाया बन जाता है। धीरे-धीरे अँधेरी रात होने लगती है। होता आया है, यही स्वाभाविक है। नहीं, स्वाभाविक कहीं कुछ नहीं है। कम-से-कम मेरे जीवन में .. यह कैसी जिंदगी मैं जी रही हूँ.. मैं छोड़ क्यों नहीं देती ? मेरा परिचय क्या है इस उम्र में किसकी पत्नी, किसकी माँ ? किस घर की बहू ? मैं न सधवा न विधवा ।"[56] 'रीतू' का पति कुणाल पत्नी का त्याग कर अन्य स्त्री से संबंध स्थापित करता है। रमा रीतू से कहती है-"औरत के आत्मविश्वास की चिंता है किसीको ? क्या कभी यह भी सोचा कि एक ही साथ कई-कई स्तरों में वह कितना-कितना टूटती है.. औरत का कब कौनसा घर हुआ है? वह रीतू के पति का घर है। यह पिता का फिर भाईयों का।"[57]

स्त्री अपने हक की माँग करे तो किससे ? चारो तरफ तो समाज के जाल ने उसे जकड़ रखा है। समाज के नियम, विवाहसंस्था, पारिवारिक अवधारणाएँ सब पर पुरूष की सत्ता है। 'अपने-अपने चेहरे' में इसी बात को पुख्ता किया गया है- "सजा देनेवाला पुरूष ? तुम्हारे हक में लड़नेवाला पुरूष ? उस 'दूसरी औरत के हक में भी कोई पुरूष लड़ेगा। तुम इन पुरूषों से पार पाओगी ? इसी पुरूष ने तलाक का भी कानून बनाया है। वह जानता था कि एक पत्नीत्व पर आधारित विवाह की संस्था में टूटन आ ही सकती है।"[58] 'पीली आंधी' उपन्यास की सोमा अपनी सैक्स की इच्छा पूरी करने के लिए सुजित से संबंध स्थापित करती है। मोहन अपनी पत्नी की बहन से गलत व्यवहार करता है। 'पद्मावती' माधो से शादी कर अपनी सेक्स की तृप्ति माधो से पूरी नहीं कर पाती। गरीबी के कारण माधो जैसे दूहाजू से उसका अनमेल विवाह होता है। 'स्त्री-पक्ष' में वृंदा के साथ सुमित गलत व्यवहार करता है। तब वह तलाक के पश्चात आर्जव से यौन संबंध स्थापित करती है।

इस प्रकार प्रभा जी के उपन्यासों में समाज के लिए विवाह के बंधन को ढोना, सेक्स और घर से बाहर प्रेम की तलाश करना इन समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है।

6.2.2 कार्पोरेट जगत का वास्तव चित्रण:-

प्रभा खेतान के उपन्यासों में कार्पोरेट जगत का वास्तव चित्रण मिलता है। 'तालाबंदी', 'अग्निसंभवा', 'एड्स' आदि व्यवसाय जगत से संलग्न सशक्त उपन्यास है। आज भारत में बाजारवाद, वैश्वीकरण और निरंकुश उपभोक्तावाद नजर आ रहा है, उसे प्रभा जी ने बड़ी कुशलता के साथ अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। उनके उपन्यास व्यावसायिक जगत की वैचारिकता और धोखाधड़ी को भी प्रस्तुत करते हैं। 'तालाबंदी' उपन्यास के माध्यम से प्रभा मालिक-मजदूर के बीच के वैचारिक संघर्ष को व्यक्त करती है। मार्क्सवाद की सशक्त अभिव्यक्ति इस उपन्यास में दिखाई देती है। इसमें लेखिका की अनुभूति की यथार्थ अभिव्यक्ति है।

इसमें उद्योगपति और आम नागरिक के उलझे हुए संबंध को दर्शाया है। एक अमीर व्यवसायी के प्रति आम धारणा यह होती हे कि वह सिर्फ पैसे की भाषा जानता है और मजदूरों का शोषण करता है। मगर वह नही जानता की पैसा कमाना इतना आसान नहीं। हर व्यवसायी जीवन में खतरा उठाता है और व्यवसाय की आंतरिक टूटन तथा बाहरी हस्तक्षेप का सामना करता है। वह सदैव आशंकित रहता है कि बाहरी हस्तक्षेप न जाने कब फैक्ट्री बंद करने के लिए मजबूर कर दे। एक व्यवसायी मजदूर की पार्टी द्वारा तय की हुई काम की कीमत अदा करता है, युनियन के नियमों को मानता है। सीटू जैसी युनियन जो हर महीने मजदूरों से चंदा लेती है और फिर कहती है कि हम मजदूर के साथ खड़े है। असली शोषक कौन है ? मालिक जो काम की कीमत अदा करता है या फिर युनियन, जो मजदूर के पैसों के बल पर राजनीति करती है। पीनू जैसे पार्टी के कार्यकर्ता पार्टी के पैसों पर ऐश करते हैं। मजदूर कब तालाबंदी कर देंगे और उत्पादन कब घट जाएगा कुछ पता नहीं। एक्सपोर्ट के काम में तो और भी खतरा रहता है, क्योंकि समय पर जहाज में माल नहीं चढ़ा तो बड़ा घाँटा उठाना पड़ता है। एक्सपोर्ट करनेवाले उद्यमी को सीधे शोषण

का सामना करना पड़ता है। नौकर शाही की जटिल प्रक्रिया, मजदूरों का रवैय्या, तालाबंदी का भय और विदेशी व्यापारियों द्वारा हो रहा शोषण आदि सब उद्यमी को अंदर से खोखला कर देते हैं।

प्रभा खेतान स्वयं एक्सपोर्ट व्यवसाय से जुड़ी थी और फैक्ट्री भी चलाती थी। इन समस्याओं को उन्होंने देखा, अनुभव किया और उसी का यथार्थ चित्रण किया।

6.2.3 भोगे हुए यथार्थ का चित्रण :-

प्रभा खेतान के उपन्यासों में भोगा हुआ यथार्थ है। स्त्री जीवन की विवशता ऊब, अकेलापन, घुटन, संत्रास भी उनके उपन्यासों में है। 'आओ पेपे, घर चलें', 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में माँ और बेटी के कटु संबंधों का वर्णन है। पाँचवी बेटी होने के कारण किस तरह प्रभा एवं प्रिया को अपनी माँ की उपेक्षा का सामना करना पड़ा। वह अपने माँ के प्यार को पाने के लिए किस तरह तरसती रही, इस सच्चाई का ही मार्मिक वर्णन लेखिका ने किया है। इसमें मारवाड़ी लड़कियों की पढ़ाई की समस्या आयी है। बड़े भाई द्वारा छोटी लड़की का लैंगिक शोषण होने पर भी माँ खामोश रहती है। पति नरेंद्र द्वारा भी प्रिया का शोषण होता है। जीवन की इस सच्चाई को प्रभा खेतान की लेखनी ने बेपर्दा किया है। इसीलिए उनके उपन्यासों में निजता का पुट है। उपन्यासों में व्यक्त शोषण की सच्चाई समाज में सर्वत्र व्याप्त है।

6.2.4 विदेश यात्रा का वर्णन :-

प्रभा जी ने व्यवसाय हेतु बहुत बार विदेश गमन किया था। इसलिए उनके उपन्यासों में विदेश की भूमि पर घटित घटनाओं का उल्लेख भी पाया जाता है। 'आओ पेपे, घर चलें' उपन्यास में प्रभा ब्युटी थेरोपी का कोर्स करने हेतु अमरिका जाती है। वहाँ की आइलिन, मरील, क्लारा, मिसेज डी, कैथी, हेल्गा आदि नारियों की समस्याओं को लेखिकाने वाणी दी है। नारी भारतीय हो या विदेशी हर जगह उसे आँसू ही बहाने पड़ते है। 'अग्निसंभवा' में प्रभा चीन और हाँगकाँग के यथार्थ का वर्णन करती है। हर जगह माँ का प्रेम एक-सा ही होता है। जैसा 'आइवी' का है। 'एड्स' उपन्यास द्वारा उन्होंने विदेशी नारियों की बेबसी एवं घुटन व्यक्त की है। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में प्रिया व्यवसाय हेतु विदेश यात्रा करती है।

इस तरह प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में विदेश यात्रा के दौरान आए अनुभव व्यक्त किए है।

6.2.5. मारवाड़ी समाज का यथार्थ चित्रण-

मारवाड़ी परिवार में जन्म लेने के कारण प्रभा के उपन्यास में मारवाड़ी समाज का यथार्थ वर्णन पाया जाता है। उन्होंने मारवाड़ी परिवार में स्त्री को दी जाने वाली अपमानजनक स्थिति का वर्णन किया है। उस समाज में स्त्री शिक्षा को महत्वहीन मानकर विवाह को महत्वपूर्ण माना जाता है। विवाह के समय उसकी इच्छा का कोई महत्व नहीं होता। मारवाड़ी समाज में मनाए जाने वाले तीज, त्यौहार, गणगौर आदि सांस्कृतिक परंपराओं का चित्रण भी है। 'अपने-अपने चेहरे', 'पीली आंधी' आदि इन उपन्यासों में यह चित्रित हुआ है। लेखिका ने मारवाड़ी समाज की सच्चाई को व्यक्त करते हुए इस समाज की मानसिकता पर प्रकाश ड़ाला है। उन्होंने बदलते हुए मारवाड़ी समाज की तसवीर देखी हैं, जो दो नाँव पर सवार है। वह एक तरफ अपनी परंपराओं को बरकरार रखना चाहता है तो दूसरी तरफ आधुनिकता के चोले को पहनना चाहता है। संपन्न घरों में कृणाल जैसे लोग अपनी यौनिक भूख के लिए नई-नई स्त्रियों की तलाश में रहते है। 'अपने-अपने चेहरे' उपन्यास में यह यथार्थ प्रस्तुत हुआ है-"दस-पंद्रह वर्षों में अपना समाज बहुत बदल गया है। यह तो कहिए अपने कलकत्ता में थोड़ी हया-शरम बची है लेकिन दिल्ली, बंबई में तो सबकुछ खुलेआम चलता है। कौन किसके साथ रहता है ? किसका कहाँ अफेयर है ? कोई नहीं जानता। शादियाँ टूट नहीं रही क्या ? आए दिन तलाक हो रहे हैं।"[59]

मारवाड़ी घरों की स्त्रियाँ शरीर की साजसज्जा तक सिमट जाती है। उनमें पार्टियों में एक-दूसरे की साडियों व गहनों पर अटकी हुई नजरें और टीका-टिप्पणी करती हुई वाचाल प्रवृत्ति दिखाई देती है। शादी को लेकर मारवाड़ी समाज के लोग वर-वधू की उम्र और पसंद-नापसंद का खयाल नहीं करते और अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा की खातिर अपने से बड़ा व्यावसायिक घर ढूंढते है।

चौके में तपता हुआ महाराज और खाने की मेज पर सजे विविध व्यंजन तो मारवाड़ी समाज की पहचान है। 'तालाबंदी' उपन्यास में मुनीम जी श्याम बाबू को

बताते है-"काल लाइसेंस बेचकर रूपिया दस लाख तिजरी म धरया था, अभी सुब स तो छह लाख ब गया-ब गया। चोको खर्चो ही सेठानी जी लाख रूपिया मंगवा लिया।"[60]

मारवाड़ी परिवारों की रईसी 'पीली आंधी' उपन्यास में दिखाई देती है। घर के कोने में सजाए हुए सोने-चांदी के फूलदान, मेज पर रखा सुपारी दान, पानी की झारी, सुराही, चांदी के थाली-गिलास और लाख-सवा लाख के दुसाले, चूनडी, हीरों के जड़े गहने आदि का वैभव प्रभा ने अपने मारवाड़ी समाज में देखा और उसका इस उपन्यास में वर्णन किया है।

6.2.6 नई संरचनात्मक दृष्टि :-

प्रभा के उपन्यास शिल्प की दृष्टि से महत्वपूर्ण न होते हुए भी अपने कथ्य की वजह से यथार्थ साबित हुए है। अलंकार का प्रयोग किए बिना ही इनकी सीधी-सरल भाषा दिल को छू जाती है। विचारों की गहनता सोचने को मजबूर करती है। मुहावरें, कहावतें और सूक्तियों का प्रयोग अपनी खूबियाँ प्रकट करता है। उनकी भाषा शैली सर्वश्रेष्ठ साबित हुई है। भाषा शैली का कसाव न होते हुए भी केवल भोगे हुए यथार्थ के वर्णन के कारण उनके उपन्यास पाठक के दिल को छू जाते है। पाठक में उत्साह का संचार करते हैं। सहृदय को उचित रास्ता दिखाते है। वे नारी को अपने स्वाभिमान की रक्षा करने हेतु और अस्तित्व को साबित करने हेतु संघर्षरत रहने के लिए प्रेरित करती है। वह नारी को अपने पैरों पर खड़ी होने और जीवन में आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करती है।

6.2.7 स्त्री के विभिन्न रूप :-

प्रभा के उपन्यास में स्त्री के विभिन्न रूप पाए जाते हैं। स्त्रीवादी लेखिका होने के कारण उन्होंने उसे बखूबी चित्रित किया है। प्रभा जी के उपन्यासों में परंपरा का निर्वाह करने वाली, परिवार के लिए अपना समर्पण करनेवाली, परंपरागत पत्नी-पुत्री, प्रेमिका, माता, सास, के रूप दिखाई देते है। उनके 'पीली आंधी की पद्मावती, राधाबाई 'अपने-अपने चेहरे' की रीतू, मिसेज गोयनका, 'तालाबंदी' की सुमित्रा, श्याम बाबू की माता, 'छिन्नमस्ता' की कस्तूरी, नरेंद्र की माँ आदि पात्र नारी के परंपरागत

रूपों को स्पष्ट करते हं। 'अपने- अपने चेहरे' की रमा 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा, 'पीली आंधी' की चित्रा, 'अग्निसंभवा' की आइवी, 'छिन्नमस्ता' की नीना, आदि प्रगतिशील रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, 'स्त्री-पक्ष' की पिंकी, देविका, 'आओ पेपे, घर चलें' की कैथी, मरील, हेल्गा, क्लारा ब्राऊन, 'पीली आंधी' की सोमा, लता नारी के विद्रोही रूप को स्पष्ट करते है, इस प्रकार प्रभा के उपन्यासों में स्त्री के परंपरागत, प्रगतिशील एवं विद्रोही रूप दिखाई देते है।

प्रभा ने स्त्री के विभिन्न रूपों में यह बताया है कि स्त्री ही स्त्री के अस्तित्व को संकट में डालती है। भारतीय समाज में यही होता आ रहा है। आज ऐसे अनेक उदाहरण समाज में मिल जाते है। लेखिका ने 'छिन्नमस्ता'में यह स्पष्ट किया है। चाहे प्रिया की माँ हो या सास, या उसकी नानी व बहन, सभी स्त्री को पुरूष के आगे झुकने की सलाह देती हैं। वे स्त्री को घर की चारदीवारी में बंद रहकर पति परमेश्वर की अच्छी दासी सिद्ध होने के नुस्खे बताती है। प्रिया की सास जैसी स्त्री, दूसरी स्त्री के पास गए अपने पति को तो स्वीकार कर लेती है, मगर उस दूसरी औरत को कभी स्वीकार नहीं करती। सब कर्म तो उसके पति के किए होते हैं। मगर वह दोष उस दूसरी औरत के मत्थे मढ़ देती हैं।

परंपरागत विचारों में लिपटी यह स्त्री प्यार तो करती है, मगर दुनिया के सामने उसे स्वीकार करने की हिम्मत नहीं जुटा पाती। प्यार को सबके सामने स्वीकार ने की ताकद तो सोमा ने अर्जित की है। समाज की बेडियों को तोड़ती हुई, सोमा, स्त्री के लिए एक सुनहरा मार्ग प्रस्तुत करती है।

सदा से दबी-कुचली स्त्री ने जब अपने अस्तित्व के लिए कदम बढाया, अपने अधिकारों के लिए मुँह खोला तो पुरूष की सत्ता ने यही कहा कि इसे होश नहीं यह क्या करने जा रही है। इसका परिणाम क्या होगा, यह नहीं जानती। इसी स्थिति को लेकर सोमा का क्रोध प्रस्फुटित होता है- "हाँ, जब औरत अपने लिए रोती है, कुछ माँगती है तब पागल ही कहलाती है।"[61]

इस प्रकार सोमा का विद्रोही रूप प्रभा पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है। इस पुरूष जगत में अपने-आपको स्थापित करने हेतु स्त्री को स्वयं के लिए जीना सीखना

होगा। तुम सिर झुकाए खड़ी रहो, आज्ञा का पालन करना ही तुम्हारा धर्म है, ऐसा कहने वाले समाज के प्रति सोमा का आक्रोशित मन तड़प उठता है और पूछता है- "और पुरूष का धर्म क्या है ? उसका कोई धर्म नहीं ? सबकुछ जानते हुए भी आप मुझे सहन करने के लिए कह रही है ? आपने भी तो इतना सहन किया, आपको क्या मिला ?"[62]

निष्कर्ष :-

आजादी पूर्व के उपन्यासों में किसानों के बाद स्त्री की समस्याओं को प्रमुख स्थान मिला है क्योंकि तत्कालीन कथाकार, उपन्यासकार नवजागरण की चेतना से प्रभावित हुए थे। परंतु पुरूष लेखकों ने परंपरागत नारी को संहिता के चौखट में रखकर ही उसका उद्धार करना चाहा। स्त्री को उस घेरे से बाहर निकलने को कोई द्वार नहीं मिला। लेकिन आजादी के बाद भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति में जबरदस्त बदलाव आया। हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी की लेखकीय संवेदना अत्याधिक मुखर होकर प्रकट हुई।

सन 1960 के पश्चात समकालीन महिला लेखिकाओं ने स्त्री की त्रासदी और विडंबना उसकी शोषित स्थिति, उसकी सामाजिक-आर्थिक पराधीनता, सदियों से चले आते स्त्री संबंधों, सामंती मूल्यों, रूढ़िग्रस्त मान्यताओं और धारणाओं से जुड़े प्रश्नों को खुले, तीखे और साहसपूर्ण ढंग से रखना चाहा। इसके साथ-साथ इस तथ्य की ओर भी संकेत किया कि, नारी स्वंय को पुरूष के समकक्ष सृजन के क्षेत्र में स्थापित करने में सक्षम है। इन महिला लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, नासिरा शर्मा, मेहरून्निसा परवेज, राजी सेठ, सूर्यबाला, शशिप्रभा शास्त्री, चंद्रकांता, मृणाल, पांडे, मैत्रेयी पुष्पा आदि का योगदान रहा है।

इन समस्त लेखिकाओं के लेखन पर यदि प्रकाश डाला जाय तो पता चलता है कि उनके महत्वपूर्ण रचनात्मक प्रयत्न के केंद्र में समसामायिक जीवन संदर्भों को विभिन्न रूप और आकार देती स्त्री चेतना है। उषा प्रियवंदा के'पचपन खम्भे लाल दीवारें' में सीमित आयवाले मध्यवर्गीय परिवार की एक पढ़ी-लिखी नौकरी पेशा,

अधिक उम्र तक अविवाहित रह जानेवाली लड़की के मानसिक तनाव और संघर्षों का अंकन होता है, तो 'रूकोगी नहीं राधिका' में आधुनिक नारी की पीड़ा और विद्रोह को देखा जाता है। मृदुला गर्ग के लगभग सभी उपन्यासों में आधुनिक नारी की जटिल मानसिकता और अस्मिता का संघर्ष देखा जा सकता है। 'उसके हिस्से की धूप' में स्त्री के प्रेम का त्रिकोणात्मक संघर्ष बिल्कुल नये रूप में परंपरागत मूल्यों और भावुकता की मानसिकता को नकारते हुए प्रस्तुत होता है।

'मन्नू भंडारी' ने 'आपका बंटी' में तलाकशुदा पति-पत्नी और उनकी संतान का केंद्र में रखकर आधुनिक स्त्री की जटिलता से भरी जिंदगी का चित्रण किया है। 'सूर्यबाला' ने 'यामिनी कथा' में पुनर्विवाह और संतान की समस्या को दूसरे कोण से प्रस्तुत किया है। 'राजी सेठ' के 'तत्सम' 'चंद्रकांता' के 'कोणार्क' में भी स्त्री की पीड़ा को प्रस्तुत किया गया है।

नासिरा शर्मा ने 'ठीकरे की मंगनी' में मुस्लिम समाज की स्त्री को रूढ़ी परंपरा से भरे माहौल के घुटन से निकाल कर अपनी अलग पहचान बनाते हुए दिखाया गया है। मेहरून्निसा परवेज ने पुरूष द्वारा स्त्री के देह शोषण का संवेदनापूर्ण अंकन किया है। कृष्णा सोबती ने 'मित्रो मरजानी' में मध्यवर्गीय पंजाबी समाज की रूढ़ियों और नारी संहिता की धाराओं का छिन्न-भिन्न कर देने वाली दुस्साहसी स्त्री का चित्रण किया है। उसी तरह मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' 'चाक' 'झूलानट' और 'अल्मा कबूतरी ' आदि उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश में उभरती नयी नारी चेतना को रखा है। उनके नारी-पात्र आधुनिक स्त्री के सबलीकरण की विचारधारा को प्रतिपादित करते है। सुनीता जैन ने अपने उपन्यासों में विदेशी परिवेश में आधुनिक स्त्री के नैतिक संकट और दांपत्य जीवन में सामंजस्य की समस्या को दर्शाया है।

इन समस्त महिला उपन्यासकारों की पंक्ति में अपने प्रभावी लेखन के कारण प्रभा खेतान का नाम शीर्षस्थ है। प्रभा खेतान ने अपने उपन्यास साहित्य में सामाजिक रूढ़ियाँ, कुप्रथाओं एवं विसंगतियों के प्रति विद्रोहात्मक अभिव्यक्ति की है। उन्होंने सामाजिक नैतिक मूल्यों को ललकारा है, तथा व्यक्तिगत स्तरपर स्वतंत्रतापूर्वक जीने

की कामना का समर्थन कर नारी को स्वावलंबी बनाकर समाज की सड़ीगली मान्यताओं से मुक्त कराना चाहा है।

समकालीन महिला लेखिकाओं की नायिकाएँ समझौतावादी, संस्कारित, शोषित, मेहनती, आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासपूर्ण, सिद्धांतवादी, स्वातंत्र्यप्रिय, ईमानदार, कर्तव्यपरायण, भावुक, ममतामयी, सुशील हैं। इसके साथ ही इनके कुछ पात्र मनोरूग्ण बन जाते हैं या फिर जीवन से पलायन कर आत्महत्या का प्रयत्न करते हैं। किंतु प्रभा खेतान के नारी पात्र समाज के सामने डटकर खड़े रहते है। वे पलायन नहीं करते और न ही मनोरूग्ण बनते हैं। प्रभा खेतान की यही विशेषता उनकी अलग पहचान बनाती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना, डॉ. सानप शाम, पृ. 81
2. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 40
3. वही पृ. 40
4. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी डॉ. अशोक मराठे, पृ. 70
5. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना डॉ. सानप शाम, पृ. 82
6. वही पृ. 47
7. समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में मूल्य बोध, डॉ. राजकुमारी शर्मा, पृ. 67
8. बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 108
9. स्त्री विमर्श समकालीन चिंतन, सं. डॉ. ऋचा शर्मा, पृ. 55
10. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, डॉ. वैशाली देशपांडे, पृ. 159
11. समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में मूल्य बोध डॉ. राजकुमारी शर्मा, पृ. 67
12. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 85
13. वही पृ. 89
14. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 101
15. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, डॉ. वैशाली देशपांडे, पृ. 98
16. वही पृ. 99
17. वही पृ. 99
18. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, डॉ. वैशाली देशपांडे, पृ. 100-101
19. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 83
20. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, डॉ. वैशाली देशपांडे, पृ. 105
21. वही पृ. 105
22. वही पृ. 108
23. वही पृ. 111

24. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 78-79
25. वही पृ. 87-88
26. उसका घर, मेहरून्निसा परवेज, पृ. 33
27. उसका घर, मेहरून्निसा परवेज, पृ. 5
28. वही पृ. 82-83
29. महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, डॉ. अमर ज्योति पृ. 99
30. कोरजा, मेहरून्निसा परवेज, पृ. 121
31. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, डॉ. वैशाली देशपांडे, पृ. 73
32. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 96
33. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ.कामिनी तिवारी, पृ. 90
34. वही पृ. 101
35. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 101
36. वही पृ. 82
37. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 75
38. वही पृ. 93
39. वही पृ. 80
40. वही पृ. 93
41. वही पृ. 97
42. वही पृ. 95
43. वही पृ. 98
44. वही पृ. 83
45. वही पृ. 87
46. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतन, डॉ.सानप शाम, पृ-82-83
47. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ.कामिनी तिवारी, पृ-92
48. वही पृ. 92

49. समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में मूल्य बोध, डॉ. राजकुमारी शर्मा, पृ. 160-161
50. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 23
51. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, हंस, अप्रैल 1992, पृ.58
52. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.74
53. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 11
54. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ. 77
55. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 103
56. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ.75
57. वहीं, पृ.102
58. वहीं, पृ.125
59. वहीं, पृ.110
60. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ. 10
61. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ.252
62. वही, पृ.264